ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

बीएएनसी-131

मानव विज्ञान और शोध विधियां

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

बी.ए.एन.सी.-131

मानव विज्ञान और शोध विधि

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रो आर सिवा प्रसाद (सेवानिवृत्त)
मानव विज्ञान विभाग
वर्तमान में मानद प्रोफेसर
ई-लर्निंग सेंटर, हैदराबाद
विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो पी विजय प्रकाश (सेवानिवृत्त)
पूर्व रजिस्ट्रार और प्रमुख, मानव
विज्ञान विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय
विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश

प्रो अनूप कपूर (सेवानिवृत्त)
पूर्व प्रोफेसर और प्रमुख
मानव विज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो राजन गौड़ (सेवानिवृत्त)
मानवविज्ञान विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

प्रो नीता माथुर
समाजशास्त्र संकाय
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

डॉ. क्यू. मारक
सहायक प्रोफेसर,
मानव विज्ञान विभाग
नार्थ-ईस्ट हिल विश्वविद्यालय
शिलांग, मेघालय

प्रो रश्मि सिन्हा
मानव विज्ञान संकाय
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ के अनिल कुमार
मानव विज्ञान संकाय
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ पल्ला वेंकटरामन
मानव विज्ञान संकाय
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ रुखसाना जमान
मानव विज्ञान संकाय
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ मीतू दास
मानव विज्ञान संकाय
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

खंड		इकाई लेखक
खंड I	**मानव विज्ञान की समझ**	
इकाई 1	मानव विज्ञान की परिभाषा क्षेत्र और महत्व	डॉ. प्रशांत खत्री, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
इकाई 2	मानव विज्ञान की शाखाएँ	डॉ. रमीजा हसन, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान विभाग, मधाब चौधरी कॉलेज, बारपेटा असोम
इकाई 3	संबद्ध क्षेत्रों के साथ मानव विज्ञान	डॉ. केया पांडे, एसोसिएट प्रोफेसर, मानव विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय,
	का संबंध	प्रो. रंजना रे, पूर्व प्रोफेसर, मानव विज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता
खंड II	**मानव विज्ञान की उत्पत्ति और विकास**	
इकाई 4	मानव विज्ञान का इतिहास और विकास	प्रो सुभद्रा चन्ना, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 5	भारत में मानव विज्ञान	डॉ के अनिल कुमार, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान संकाय, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 6	मानव विज्ञान में क्षेत्रकार्य परंपरा	प्रो विनय कुमार श्रीवास्तव, पूर्व प्रमुख, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, वर्तमान निदेशक, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कोलकाता
खंड III	**मानव विज्ञान के प्रमुख क्षेत्र**	
इकाई 7	जैविक मानव विज्ञान की अवधारणाएं और विकास	डॉ अर्नब घोष, मानव विज्ञान विभाग, विश्व–भारती, शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल
इकाई 8	सामाजिक मानव विज्ञान की अवधारणाएं और विकास	प्रो सुभद्रा चन्ना, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 9	पुरातत्व मानव विज्ञान की अवधारणाएं और विकास	डॉ मधुलिका सामंता, पुरातत्वविद अधीक्षण, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, वडोदरा, गुजरात
खंड IV	**अनुसंधान के तरीके /विधि और तकनीक**	
इकाई 10	मानव शास्त्रीय अनुसंधान के दृष्टिकोण	डॉ. अनिल कुमार, मानव विज्ञान संकाय, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 11	विधि, उपकरण और तकनीक	डॉ रुखसाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, इग्नू, नई दिल्ली, डॉ अर्नब घोष, मानव विज्ञान विभाग, विश्व-भारती, शांति निकेतन,पश्चिम बंगाल, डॉ. पी. वेंकटरमन, एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 12	अनुसन्धान की रूपरेखा	डॉ. अनिल कुमार, मानव विज्ञान संकाय, इग्नू, नई दिल्ली
व्याहारिक गाइड		

कवर डिजाइन : डॉ. मोनिका सैनी **हिंदी अनुवादक :** नीधू मांझी

अकादमिक परामर्शदाता : डॉ. पंकज उपाध्याय, डॉ. मोनिका सैनी

पाठ्यक्रम समन्वयक : डॉ. के अनिल कुमार, मानव विज्ञान संकाय, एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

प्रधान संपादक : डॉ के अनिल कुमार, मानव विज्ञान संकाय, एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

भाषा संपादक : श्री भूपेन्द्र सिंह, फ्रीलांस संपादक और डॉ. पंकज उपाध्याय

मुद्रण उत्पादन

श्री राजीव गिरधर
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
सा.नि.वि.प्र. (इग्नू)

श्री हेमन्त कुमार परीदा
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
सा.नि.वि.प्र. (इग्नू)

अगस्त, 2019
© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019
ISBN: 978-93-89499-11-7

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (मुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदानगढ़ी,, नई दिल्ली–110 068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, एमपीडीडी द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

लेजर कम्पोजिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, V-166A, भगवती विहार, (नजदीक सेक्टर–2, द्वारका), उत्तम नगर, नई दिल्ली–110059

मुद्रक : चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क्स प्रा. लि., सी–40, सेक्टर–8, नोएडा, उ.प्र.

विषय सूची

खंड 1 मानव विज्ञान की समझ

इकाई 1	मानव विज्ञान की परिभाषा, कार्य क्षेत्र और महत्व	9
इकाई 2	मानव विज्ञान की शाखाएं	24
इकाई 3	संबद्ध क्षेत्रों के साथ मानव विज्ञान का संबंध	46

खंड 2 मानव विज्ञान का उद्भव और विकास

इकाई 4	मानव विज्ञान का इतिहास और विकास	63
इकाई 5	भारत में मानव विज्ञान	74
इकाई 6	मानव विज्ञान में क्षेत्रकार्य परंपरा	91

खंड 3 मानव विज्ञान के प्रमुख क्षेत्र

इकाई 7	जैविक मानव विज्ञान की अवधारणाएँ और विकास	103
इकाई 8	सामाजिक मानव विज्ञान की अवधारणाएं और विकास	114
इकाई 9	पुरातात्विक मानव विज्ञान की अवधारणा और विकास	128

खंड 4 अनुसंधान के तरीके और तकनीक

इकाई 10	मानवशास्त्रीय अनुसंधान के दृष्टिकोण	143
इकाई 11	विधि, उपकरण और तकनीक	158
इकाई 12	अनुसंधान/शोध की रूपरेखा	175

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

पाठ्यक्रम परिचय

मानव विज्ञान एक समग्र विज्ञान है क्योंकि यह मानव जाति के जैविक और सांस्कृतिक विविधता के सभी पहलुओं से संबंधित है। आमतौर पर, मानव विज्ञान के विषय को चार उपक्षेत्रों में विभाजित किया गया है : भौतिक/जैविक मानव विज्ञान, सामाजिक/सांस्कृतिक मानव विज्ञान, भाषाई मानव विज्ञान और पुरातत्व मानव विज्ञान।

भौतिक/जैविक मानव विज्ञान का उद्देश्य जैविक उत्पत्ति, विकासवादी परिवर्तन और मानव प्रजातियों की आनुवंशिक विविधता को समझना है। सामाजिक/सांस्कृतिक मानव विज्ञानी का लक्ष्य दुनिया भर में मानव सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता को समझना है जिसमें विविधता और परिवर्तन शामिल हैं। पुरातत्व मानव विज्ञान, वस्तु अवशेषों के माध्यम से पूर्व की मानव संस्कृतियों के अध्ययन से संबंधित है। भाषाई मानव विज्ञान, मानव भाषा और संचार के अध्ययन से संबंधित है, जिसमें इसकी उत्पत्ति, इतिहास और समकालीन भिन्नता और परिवर्तन शामिल हैं।

अध्ययन का समग्र दृष्टिकोण प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानव स्थितियों पर मानवतावादी दृष्टिकोण को अलग करता है। मानव विज्ञानी वैज्ञानिक और मानववादी दोनों दृष्टिकोणों से मानवजाति के सभी पहलुओं की जांच करते हैं। मानव विज्ञान अनुसंधान का मुख्य केंद्र मानव की एक गहरी और समृद्ध समझ है कि हम मानव के रूप में कौन हैं, हम कैसे बदल गए और हम जैसे हैं वैसे क्यों हैं? मानव विज्ञानी क्षेत्र-आधारित अनुसंधान के साथ-साथ प्रयोगशाला विश्लेषणों और स्थापित सिद्धांतों, विधियों और विश्लेषणात्मक तकनीकों के साथ अभिलेखीय जांच में संलग्न हैं। मानव विज्ञान की प्रत्येक शाखा अनुसंधान हितों के एक अलग समूह पर केंद्रित है और आम तौर पर विभिन्न अनुसंधान तकनीकों का उपयोग करती है।

यह पाठ्यक्रम छः क्रेडिट का है। यह पाठ्यक्रम, भारत में मानव विज्ञान विषय की उत्पत्ति और विकास के साथ मानव विज्ञान में प्रयुक्त मुख्य अनुसंधान विधियों का परिचय प्रदान करेगा। यह पाठ्यक्रम उन शिक्षार्थियों के लिए बनाया गया है जो मानव विज्ञान या अन्य संबंधित क्षेत्रों में क्षेत्रकार्य करने के लिए जा सकते हैं। इस पाठ्यक्रम में आप सीखेंगे कि मानव विज्ञान क्या है, इसकी प्रमुख शाखाएं कौन सी हैं, इसकी अवधारणाएं क्या हैं और इस विषय का विकास कैसे हुआ। आप उन अनुसंधान विधियों, उपकरणों और तकनीकों के बारे में भी सीखेंगे, जिसे मानव विज्ञानी समकालीन दुनिया में वैश्विक मुद्दों को हल करने के लिए मानव का अध्ययन करने के लिए नियोजित करते हैं।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

खंड परिचय

मानव अस्तित्व और उपलब्धियों के पहलुओं की जांच करने वाले सभी विषयों में से, मानव विज्ञान केवल मानव के जैविक और सांस्कृतिक पहलुओं की पड़ताल करता है। हालांकि मानवशास्त्र तुलनात्मक रूप से एक नया विषय है, यह शिक्षाविदों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भले ही मानव विज्ञान ने शिक्षण और अनुसंधान के एक स्वतंत्र विषय के रूप में विकसित होने में बहुत समय लिया, लेकिन यह भारत के लगभग सभी विश्वविद्यालयों और दुनिया भर में पढ़ाया जाता है। मानव विज्ञान एक समग्र विज्ञान है। इसकी समग्र प्रकृति को समझने के लिए मानव विज्ञान की विभिन्न शाखाओं को जानना महत्वपूर्ण है । इस पाठ्यक्रम को चार खंडों में विभाजित किया गया है।

खंड 1: पहला खंड 'मानव विज्ञान की समझ' है। यह शिक्षार्थियों को विषय वस्तु की बुनियादी समझ प्रदान करता है और मानव विज्ञान के महत्व पर प्रकाश डालता है। इस खंड में तीन इकाई शामिल हैं : **इकाई 1** मानव विज्ञान के अर्थ के साथ संबंधित है। इसमें मानव विज्ञान की विभिन्न परिभाषाएं, क्षेत्र और महत्व शामिल हैं। **इकाई 2** मानव विज्ञान की विभिन्न शाखाओं से संबंधित है। **इकाई 3** अन्य विषयों के साथ मानव विज्ञान के संबंध से संबंधित है।

खंड 2: दूसरा खंड मानव विज्ञान की उत्पत्ति और विकास है। इस खंड में तीन इकाई शामिल हैं: **इकाई 4** मानव विज्ञान का इतिहास और विकास, जो दुनिया में मानव विज्ञान के विकास से संबंधित है। **इकाई 5** भारत में मानव विज्ञान, जो भारत में मानव विज्ञान के वृद्धि और विकास से संबंधित है। **इकाई 6** मानव विज्ञान में क्षेत्र कार्य परंपरा, जो मानव विज्ञान में क्षेत्र कार्य परंपरा की शुरुआत और विकास का वर्णन करता है।

खंड 3: तीसरा खंड मानव विज्ञान के प्रमुख क्षेत्र हैं। यह खंड विषय की प्रमुख शाखाओं के वृद्धि और विकास से संबंधित है। इस खंड में तीन इकाइयां शामिल हैं**: इकाई 7** जैविक मानव विज्ञान में अवधारणाएं और विकास का वर्णन करता है। **इकाई 8** सामाजिक मानव विज्ञान में अवधारणाएं और विकास का वर्णन करता है। **इकाई 9** पुरातत्व मानव विज्ञान में अवधारणाएं और विकास, और प्रागैतिहासिक और पुरातात्विक मानव विज्ञान में अवधारणाओं और विकास का वर्णन करता है।

खंड 4: चौथा खंड 'अनुसंधान की विधि और तकनीक' से सम्बंधित है। यह खंड मानव विज्ञान में क्षेत्र अनुसंधान विधियों के लिए एक बुनियादी उपकरण प्रदान करता है। यह शिक्षार्थियों को अपने स्वयं के अनुसंधान परियोजना की योजना बनाने और निष्पादित करने के लिए एक आधार प्रदान करता है। यह मानव विज्ञान में अनुसंधान विधियों के मुख्य घटकों का वर्णन करता है। इस खंड में तीन इकाई शामिल हैं**: इकाई 10** मानवशास्त्रीय अनुसंधान के दृष्टिकोण जो कि मानव विज्ञान के बुनियादी मुद्दों और उसके दृष्टिकोण से संबंधित है। **इकाई 11** में शोधकर्ता विभिन्न विधियों, उपकरणों, और तकनीकों द्वारा क्षेत्रकार्य से आँकड़े संग्रह के विभिन्न तरीकों की रूपरेखा तैयार करती है, जिसमें शोधकर्ता अध्ययन किए गए समाजों के बीच रहते हैं और अपने जीवन के तरीकों का बारीकी से निरीक्षण करते हैं। **इकाई 12** अनुसंधान की रूपरेखा, अनुसंधान प्रक्रियाओं और अध्ययन के तरीके और शैली को चित्रित करता है।

खंड 1 : मानव विज्ञान की समक्ष

इकाई 1	मानव विज्ञान की परिभाषा, कार्य क्षेत्र और महत्व	9
इकाई 2	मानव विज्ञान की शाखाएं	24
इकाई 3	संबद्ध क्षेत्रों के साथ मानव विज्ञान का संबंध	46

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 1 मानव विज्ञान की परिभाषा, कार्य क्षेत्र और महत्व*

इकाई की रूपरेखा

1.0 परिचय

1.1 मानव विज्ञान की परिभाषा

1.1.1 समग्र/एकीकृत अध्ययन

1.1.2 तुलनात्मक विज्ञान

1.1.3 क्षेत्र कार्य विधि

1.2 मानव विज्ञान के उद्देश्य

1.2.1 सांस्कृतिक सापेक्षता

1.2.2 प्रकृति-पोषण विवाद

1.2.3 जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए मानव विज्ञान का उपयोग

1.2.4 सार्वभौमिक बनाम विशिष्ट ज्ञान

1.3 मानव विज्ञान के कार्य क्षेत्र

1.3.1 शहरी मानव विज्ञान

1.3.2 मानव विज्ञान पद्धतियां

1.3.3 व्यवसायिक प्रबंधन

1.3.4 आपदा प्रबंधन

1.3.5 जैविक/शारीरिक मानव विज्ञान

1.3.6 पुरातात्विक मानव विज्ञान

1.4 महत्व

1.5 सारांश

1.6 संदर्भ

1.7 आपकी प्रगति की जांच के लिए उत्तर

सीखने के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित बातों को जानने में सक्षम होंगे :

- मानव विज्ञान की परिभाषा;
- अध्ययन के विभिन्न पारिभाषिक लेखों की सूची;
- इसके उद्देश्यों को जानना; और
- इसके कार्यक्षेत्र और महत्व का वर्णन करना।

* डॉ. प्रशांत खत्री, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

1.0 परिचय

हम, मनुष्य हमारी अपनी बनाई गई दुनिया के निवासी हैं। इसमें हमारी शारीरिक उपस्थिति के अतरिक्त हमारी सामाजिक सांस्कृतिक और व्यवहारिक दुनिया भी है। हमें स्वयं को किसी विषय के रूप में अध्ययन करने और उससे संबंधित चीजों को जानने-समझने के लिए मानव विज्ञान विषय की आवश्यकता पड़ती है। मनुष्यों को एक विषय के रूप में समझना बहुत दिलचस्प है। मनुष्य स्वयं को अपने सभी रूपों में समझना चाहता है।

1.1 मानव विज्ञान की परिभाषा

मानव विज्ञान की एक व्यापक परिभाषा देना मुश्किल है क्योंकि यह विषय चार उप-शाखाओं में बांटा गया है जोकि मानव अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं से सम्बंधित हैं। मानवविज्ञानी कहलाने के लिए एक व्यक्ति को निम्नलिखित सभी चार शाखाओं का अध्ययन करने की आवश्यकता होती है:

- सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान
- जैविक/शारीरिक मानव विज्ञान
- पुरातत्व
- भाषाई मानव विज्ञान

हालांकि, आम तौर पर भारत और अन्य देशों में छात्रों को परास्नातक (मास्टर) की डिग्री प्राप्त करने और शोध करने के लिए इन शाखाओं में से किसी एक में विशेषज्ञता प्राप्त करनी होती है। मानव विज्ञान एक समग्र अध्ययन है क्योंकि यह संस्कृति, जीवविज्ञान, इतिहास और पर्यावरण के विभिन्न कोणों से मानव अस्तित्व को समझने की कोशिश करता है। एरिक वुल्फ (1964) कहते हैं "मानव विज्ञान एक विषय को बांधने की तुलना में स्वयं एक विषयवस्तु है। इसका कुछ भाग इतिहास में है, कुछ भाग साहित्य में, कुछ प्राकृतिक विज्ञान में और कुछ भाग सामाजिक विज्ञान में। यह मनुष्यों को भीतर और बाहर दोनों तरह से अध्ययन करने का प्रयास करता है। यह मनुष्यों और उसकी परिकल्पनाओं दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्य से सम्बन्धित मानवतावादी विज्ञान का यह सबसे कुशल विज्ञान है।"

मानववैज्ञानिक मानव प्रजातियों की उत्पत्ति और विकास को समझने में रुचि रखते हैं। वे यह जानने में भी रुचि रखते हैं कि पारिस्थितिकी संस्कृति को कैसे प्रभावित करती है और कैसे मानव व्यक्तित्व के विकास और संवृद्धि का संस्कृति पर असर पड़ता है। वे मानव भिन्नता के अस्तित्व के बारे में जांच करते हैं और साथ ही इसके बदलावों के पीछे के कारणों को खोजने का भी प्रयास करते हैं। वे मानव अतीत और इसकी संस्कृति के पुनर्निर्माण में समान रुचि रखते हैं। इस प्रकार के विविध हितों के अतिरिक्त मानववैज्ञानियों के पास अनुसंधान विधियों के रूप में एक विविध और अद्वितीय उपकरण समूह भी है जो विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देने में सहायता करता है। मानववैज्ञानिक व्यावहारिक समस्याओं को हल करने में अनुसंधान के अपने ज्ञान और विभिन्न विधियों को भी लागू करते हैं और इस प्रकार मानव विज्ञान में एक नए क्षेत्र का उद्भव होता है जिसे अनुप्रयुक्त (एप्लॉइड) मानव विज्ञान कहा जाता है।

मानव विज्ञान शब्द का शाब्दिक अर्थ है मानव का विज्ञान। यह दो शब्दों से मिलकर बना है जिसमें *एंथ्रोपस* का तात्पर्य मानव और *लोगोस* का अर्थ विज्ञान से है। हालांकि, यह परिभाषा

मानव विज्ञान विषय के बारे में एक बहुत व्यापक और अस्पष्ट विचार देती है क्योंकि मनोविज्ञान, इतिहास और समाजशास्त्र जैसे अन्य विषयों को भी मानव अध्ययन के रूप में माना जाता है।

अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन ने मानव विज्ञान को "अतीत और वर्तमान मनुष्यों के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया है। मानव इतिहास में संस्कृतियों के पूर्ण प्रभाव और जटिलता को समझने के लिए मानव विज्ञान ने सामाजिक और जीव विज्ञान के साथ-साथ मानविकी और भौतिक विज्ञानों के ज्ञान को भी आकर्षित किया है, और अपने ज्ञान क्षेत्र को इनके सहयोग से निर्मित भी किया है। मानववैज्ञानिकों की एक केंद्रीय चिंता मानव समस्याओं के समाधान के लिए ज्ञान का उपयोग करना है।" इस परिभाषा में मूल विचार यह है कि मानव विज्ञान एक एकीकृत विज्ञान है जो मानवता को इसकी संपूर्णता में समझने की कोशिश करता है। यह मानव अस्तित्व की बेहतर समझ के लिए सांस्कृतिक और जैविक विविधता का बहुत अच्छे से अध्ययन करता है। मानव विज्ञान विविधता की सराहना करता है और इसे मानता भी है।

1.1.1 समग्र/एकीकृत अध्ययन

मानव अतीत और वर्तमान को समझने के लिए जैविक, पुरातात्विक और सांस्कृतिक आयामों को एकीकृत करना दिलचस्प परिणाम उत्पन्न कर सकता है। एक उदाहरण इस बात को और अधिक स्पष्ट रूप से चित्रित कर सकता है। हम सभी ने सिंधु घाटी सभ्यता के बारे में अध्ययन किया है और उस अवधि के दौरान हमने उसकी मनोहर संस्कृति और समाज के बारे में जाना है। इसके अतीत को कलाकृतियों, मुहरों, मूर्तियों, दैनिक उपयोग की वस्तुओं, विलासिता आदि की वस्तुओं के रूप में पुरातात्विक निष्कर्षों के आधार पर पुनर्निर्मित किया गया था। क्योंकि इसमें लिपियों की व्याख्या नहीं की गयी थी। अतीत को प्रासंगिक निष्कर्षों और वैज्ञानिक विश्लेषण पर पूरी तरह से पुनर्निर्मित किया जाता है।

हड़प्पा से कुछ नर और मादा कंकालों के अवशेष पाए गए हैं। इन अवशेषों के अनुवांशिक विश्लेषण पर पाया गया कि अधिकांश पुरुष कंकाल अवशेष आनुवांशिक रूप से संबंधित नहीं थे। दूसरी तरफ, ज्यादातर मादा कंकाल आनुवंशिक रूप से एक-दूसरे से संबंधित थीं। चूंकि अधिकांश मादा कंकाल आनुवांशिक रूप से संबंधित थीं, इसलिए विवाह के बाद स्वाभाविक रूप से निवास स्थान मातृस्थानक हो सकता है। इससे पता चलता है कि शादी के बाद एक पुरुष अपनी पत्नी के घर में रहने के लिए जा सकता था, जो कि आम तौर पर हम भारत में देखते हैं, ये उसके विपरीत है। समाज में महिलाओं की स्थिति के संदर्भ में इसका महत्वपूर्ण असर भी हो सकता है। यह देखा गया है कि मातृस्थानक समाजों में महिलाओं की स्थिति पितृसत्तात्मक समकक्षों की तुलना में बेहतर है। इसलिए मानव विज्ञान, मानव अस्तित्व का समग्र दृष्टिकोण दर्शाता है। यह मानव प्रजातियों के भीतर भिन्नताओं का विश्लेषण करने के लिए विकासवादी योजना में मानव विज्ञान से शुरू होता है। तथापि, यह संस्कृति के उद्भव और विविधीकरण तथा सभ्यता के उद्भव को भी समझने की कोशिश करता है। (मैकिन्टॉश, 2008)

1.1.2 तुलनात्मक विज्ञान

समग्रता के अतिरिक्त मानव विज्ञान की अन्य विशेषताएँ भी हैं। मानव विज्ञान की शुरुआत तब हुई थी जब यह एक तुलनात्मक विज्ञान के रूप में था। जब यह तुलनात्मक विधि के माध्यम

से होकर गुजरता है तब एक मानव वैज्ञानिक किसी प्रकार के सामान्यीकरण तक पहुंचता है। उनके बीच समानताएं और मतभेदों को समझने के लिए विभिन्न संस्कृतियों और मानव आबादी की तुलना की जाती है। विषय के उद्भव के दौरान तुलनात्मक विकास में विभिन्न सांस्कृतिक समूहों को चित्रित और वर्गीकृत करने के तरीके के रूप में तुलना का उपयोग किया गया था। हालांकि, कुछ समय बाद (बीसवीं शताब्दी की शुरुआत से) की अवधि में इस विषय में नयी विचारधाराओं के उद्भव के कारण समाज की संरचना और समाज को नियंत्रित करने वाले कानूनों के बारे में कुछ सामान्यीकरण तक पहुंचने के लिए तुलना की गई थी।

तुलनात्मक विधि ने प्रजाति केंद्रिकता और सांस्कृतिक सापेक्षता के बीच एक महत्वपूर्ण विवाद भी उत्पन्न किया। आरम्भ में 'सरल' और 'जटिल' समाजों के बीच तुलना ने यह विश्वास किया कि कुछ समाज दूसरों के लिए श्रेष्ठ हैं और पश्चिमी समाज सांस्कृतिक विकास के प्रतीक हैं। इससे एक जातीय-केंद्रित पूर्वाग्रह बढ़ गया। हालांकि, कुछ समय के बाद यह महसूस किया गया कि प्रत्येक संस्कृति को अपने विशिष्ट संदर्भ में समझा जाना चाहिए और बेहतर या निम्न संस्कृति की अवधारणा जैसा कुछ भी नहीं है, इससे सांस्कृतिक सापेक्षता एक विचार के रूप में सामने आई। (हैरिस, 1968 / 2001) यह ऐसा विचार है जो इस विषय को मूल्यों से जोड़ता है और हमें अन्य संस्कृतियों और आबादी के प्रति अधिक सहनशील बनाता है। विचारों के इस तरह के विवाद और संश्लेषण केवल मानव विज्ञान और सांस्कृतिक विविधताओं से संबंधित मानव विज्ञान जैसे विषय में ही संभव था।

1.1.3 क्षेत्रकार्य विधि

मानव विज्ञान की पहचान ही इसकी क्षेत्र कार्य विधि है। बी. मालिनोव्स्की गहन क्षेत्र कार्य विधि के लिए लोकप्रिय हैं। एक मानव वैज्ञानिक से क्षेत्र (फील्ड) में काफी समय बिताने की उम्मीद की जाती है (लगभग एक वर्ष)। पारंपरिक रूप से एक क्षेत्र को एक सांस्कृतिक समूह में रहने वाले स्थान के रूप में परिभाषित किया जाता है। अधिकतर मानववैज्ञानिक उन आदिवासी समुदायों के बीच अपना क्षेत्र चुनते हैं जो दूर-दराज की पहाड़ी, जंगल या तटीय इलाकों में रहते हैं। इस विषय के अधिकांश पुराने समर्थकों ने इस तरह के समुदायों के बीच ही अपना क्षेत्र चुना। उदाहरण के लिए,

- मालिनोव्स्की ने पापुआ न्यू गिनी में रहने वाले ट्रोब्रिंड आइलैंडरों के बीच काम किया;
- इवांस प्रिचर्ड ने एंग्लो—मिस्र सूडान के न्यूअर समुदाय के बीच काम किया;
- रैडक्लिफ ब्राउन ने अंडमान द्वीप समूहों के बीच काम किया;
- मार्ग्रेट मीड ने सामोआ के बीच काम किया था।

एक क्षेत्रीय अनुसंधानकर्ता से यह भी उम्मीद की जाती है कि वह न केवल उन लोगों के साथ रहेगा / रहेगी जिनकी वह अध्ययन करना चाहता / चाहती है लेकिन उनकी भाषा और जीवन के तरीकों को भी सीखें। उनसे यह भी उम्मीद कि जाती है कि वे लोगों की दैनिक गतिविधियों में भाग लेंगे और साथ-साथ देखें कि लोग और उनके विभिन्न संस्थान कैसे कार्य करते हैं। इस विधि को 'प्रतिभागी निरीक्षण' के रूप में जाना जाता है। इस विधि को नियोजित करते हुए एक क्षेत्र कार्यकर्ता उस समुदाय के सामाजिक जीवन में भाग लेता है जिसका वह अध्ययन कर रहा है। साथ ही यह भी देखता है कि लोग अपने सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन पर कैसे बातचीत करते हैं।

इस विधि को मालिनोव्स्की द्वारा लोकप्रिय किया गया था क्योंकि उनका मानना था कि एक मानववैज्ञानिक को लोगों पर निर्भर नहीं होना चाहिए कि लोग क्या कहते हैं और वे क्या करते हैं। बल्कि एक मानववैज्ञानिक को खुद भी देखना चाहिए कि लोग वास्तव में क्या करते हैं। क्योंकि कभी-कभी लोग आपको नहीं बताएंगे कि वे वास्तव में क्या करते हैं या वे अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को कैसे करते हैं। क्योंकि वे प्रतिनिधित्व की राजनीति में शामिल हो सकते हैं जहां वे एक 'आदर्श' को पेश कर सकते हैं और 'वास्तविकता' छुपा सकते हैं। इसलिए 'वास्तविकता' को समझने के लिए उनके अवलोकन की आवश्यकता है। प्रतिभागी अवलोकन का विचार एक शोधकर्ता को लोगों के विचारों और गतिविधियों को पूरा करने के तरीके के करीब ही जाकर मिलेगा। यह लोगों को या लोगों के दृष्टिकोण को समझने का तरीका है। (रोबेन और स्लुका, 2007)

1.1.3 गतिविधि

मानव विज्ञान क्षेत्र में रुचि रखने के लिए मालिनोव्स्की पर निर्मित बीबीसी के चार वृत्तचित्र ''टेल्स फ्राम द जंगल : मालिनोव्स्की'' देखें।

अपनी प्रगति को जांचें 1

1) मानव विज्ञान में कितनी उप-शाखाएं हैं?

....

....

....

2) गहन क्षेत्रकार्य विधि को किसने लोकप्रिय किया?

....

....

....

3) 'प्रतिभागी निरीक्षण' क्या है?

....

....

....

1.2 मानव विज्ञान के उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्यों को दो स्तरों पर परिभाषित किया जा सकता है:

क) उस विषय के छात्रों के स्तर पर जिसमें अध्ययन करने का उद्देश्य शामिल है।

ख) विभिन्न हितधारकों के स्तर पर जिसका यह कहना है कि कैसे किसी विशेष अध्ययन में अनुसंधान द्वारा एकत्रित जानकारी को बड़े पैमाने पर लोगों तक पहुँचाया जाए। या यह प्रशासकों, विचारकों और शोधकर्ताओं जैसे विभिन्न लोगों के लिए किस उद्देश्य के तहत कार्य करता है।

पहले स्तर पर मानव विज्ञान का उद्देश्य छात्रों को मानव और सांस्कृतिक विविधताओं के बारे में जागरूक करना और उसकी सराहना करना है। बदले में यह विभिन्न जीवन स्थितियों के लिए एक बहुत ही बढ़िया दृष्टिकोण की ओर जाता है। यह एकमात्र अध्ययन है जो मानव आबादी के जैव-सामाजिक अस्तित्व को ध्यान में रखता है। मानव विज्ञान में अधिकांश अग्रणी-शोध आदिवासी और किसान समूहों के बीच आयोजित किए गए हैं। इसलिए यह विषय ज्ञान के साझेकरण और प्रसार के माध्यमों का प्रयोग कर बड़े पैमाने पर हाशिए पर रहने मानव आबादी के लोगों को प्रमुख सार्वजनिक और बौद्धिक बहसों में लाने में सहायता करता है।

1.2.1 सांस्कृतिक सापेक्षता

विभिन्न हितधारकों के स्तर पर कुछ लोगों ने यह पाया कि मानव और सांस्कृतिक विकास का अध्ययन करने के उद्देश्य से मानव विज्ञान का आरम्भ एक अध्ययन विषय के रूप में हुआ। माना जाता था कि सांस्कृतिक विकास जैसे मानव विकास का आरम्भ सरल-जटिल सांस्कृतिक और सामाजिक लक्षणों से चरण-दर-चरण तरीके से हुआ था। इससे यह विश्वास हुआ कि दुनिया भर के अधिकांश जनजातीय समाज सांस्कृतिक विकास के पहले चरण का प्रतिनिधित्व करते हैं और अंततः पश्चिमी संस्कृतियों और सभ्यता के स्तर पर विकसित हुए हैं। इससे एक प्रकार का स्वजातीय उत्कृष्टता का पूर्वाग्रह हुआ। इस पूर्वाग्रह ने सफेद पश्चिमी 'जाति' की श्रेष्ठता की दिशा में उपनिवेशवाद के विचार को बढ़ावा दिया क्योंकि इसे 'आदिम' समाजों को सभ्य बनाने के लिए 'श्वेत पुरुषों' का कर्तव्य माना जाता था। यह विचार सबसे पहले अफ्रीका और एशिया में पश्चिमी उपनिवेशवाद को मजबूत करने के लिए इस्तेमाल किया गया था।

भारतीय संदर्भ में अधिकांश प्रारंभिक मानव वैज्ञानिक ब्रिटिश थे और उनका मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक तंत्र में सुधार के लिए उप-महाद्वीप में विभिन्न आबादी का अध्ययन करना था। हालांकि, मानव संस्कृति के हर मानव वैज्ञानिक और विद्वान विकासवादी के विचार की रेखा से आश्वस्त नहीं थे। इससे इस विषय के उद्देश्य में अधिक समकालिक दृष्टिकोण की ओर परिवर्तन आया और दूसरे शब्दों में मानव विज्ञान के अध्ययन से यह उद्देश्य इतिहास के अध्ययन के रूप में बदल गया। जो वर्तमान स्थिति में यहां और अब समाज के अध्ययन में अधिक चिंतित हो गया। यह उद्देश्य मालिनोव्स्की के कार्यों में सबसे अधिक दिखाई दे रहा था, जिन्होंने इस विचार को खारिज कर दिया कि साधारण सामाजिक संस्थान किसी जटिल संस्थान से कम थे। उन्होंने बुनियादी जरूरतों के विचार को प्रचारित किया जो सभी मनुष्यों के लिए आम हैं और जिनके कारण विभिन्न सामाजिक संस्थान बनते हैं। (हैरिस, 1968 / 2001)

1.2.2 प्रकृति-पोषण विमर्श

इस विषय में खोजकर्ताओं ने कुछ रूढ़िवादी धारणाओं और मान्यताओं को चुनौती देने के उद्देश्य को पूरा करने के लिए मानव विज्ञान पद्धति का उपयोग किया है। यह इस उद्देश्य के माध्यम से है कि मानव विज्ञानविदों ने प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान दोनों में कुछ बुनियादी बहसों के प्रति सकारात्मक योगदान दिया है। जिनमें से एक मुख्य विवाद है प्रकृति और पोषण विवाद। अभी भी बहस की जा रही है कि दोनों में से कौन सा महत्वपूर्ण है। क्या यह प्रकृति या जीवविज्ञान है जो मानव क्षमताओं और व्यक्तित्वों को निर्धारित करता है या क्या यह पोषण या संस्कृति है जो इस अंत में योगदान देता है? उनमें से किसी एक की ओर भारी झुकाव भयानक निष्कर्ष निकाल सकता है।

इस स्थिति में यहां बात जाति की धारणा से है। यद्यपि जाति एक सामाजिक निर्मिति है, लेकिन लोग मानते हैं कि कुछ शारीरिक विशेषताएं, कुछ व्यवहारिक स्वरूप के साथ जाते हैं। दूसरे शब्दों में, मानव व्यवहार को स्वाभाविक रूप से निर्धारित माना जाता है। इससे जाति से संबंधित कुछ रूढ़िवादों का गठन हुआ। उदाहरण के लिए, इसने एक धारणा का नेतृत्व किया कि कुछ जाति दूसरों के लिए श्रेष्ठ हैं। हालाँकि यह विचार पद्धति कुछ मानव वैज्ञानिक और खोजकर्ताओं के लिए स्वीकार्य नहीं थी और उनमें से एक फ्रांज बोऑस थे।

बोऑस का मानना था कि मानव व्यवहार सांस्कृतिक रूप से निर्धारित है और इस उद्देश्य को पूरा करने और इस विचार पद्धति को स्थापित करने के लिए उन्होंने सामोआ के बीच किशोर व्यवहार का अध्ययन करने के लिए अपनी छात्रा मार्गरेट मीड को तैयार किया। इस अध्ययन से पहले इसे व्यापक रूप से आयोजित किया गया था कि किशोरावस्था आघात और परेशानियों की उम्र थी और किशोरावस्था के लड़के और लड़कियां विद्रोही व्यवहार में शामिल होते हैं। इस तरह के व्यवहार को उनके आनुवांशिक जड़ में माना जाता था और इस प्रकार इसे सार्वभौमिक माना गया। बोआस ने तर्क दिया कि यदि वह एक भी उदाहरण प्राप्त कर सकता है जहां किशोरावस्था आघात और अशान्ति की अवधि नहीं थी, तो इस तरह के धारणा के जैविक आधार को चुनौती दी जा सकती है और इसका सांस्कृतिक आधार स्थापित किया जा सकता है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मार्गरेट मीड ने सामोआ के बीच किशोर व्यवहार का अध्ययन किया और पाया कि उनका किशोर अमेरिकियों के विपरीत था। सामोआ किशोर किसी भी संबंधित आघात या अशांति के साथ अच्छी तरह से समायोजित लग रहा था। इस तरह के एक खोज के साथ पोषण का महत्व स्थापित हो गया। (हैरिस, 1968/2001)

1.2.3 जीवन की समस्याओं को हल करने के लिये मानव विज्ञान का उपयोग

लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए मानव विज्ञान का अध्ययन और अभ्यास किया जाता है। यह मानव विज्ञान का प्रायोगिक पहलू है जिसमें लोगों को बेहतर जीवन जीने में मदद करने के लिए मानव विज्ञान संबंधी ज्ञान का उपयोग किया जाता है। वर्तमान वैश्विक संदर्भ में 'विकास' शब्द आकर्षित करता है। इसके लिए वन उत्पादन, खनिजों, कोयले आदि के रूप में प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग और खपत की आवश्यकता होती है, जिसके बदले में खनिजों को निकालने के लिए लकड़ी और खनन के लिए पेड़ गिराने की आवश्यकता हो सकती है। ऐसी गतिविधियां उन लोगों के बड़े पैमाने पर विस्थापन का कारण बनती हैं जो सदियों से ऐसे क्षेत्रों में रहते हैं। इस संदर्भ में मानव विज्ञान का ज्ञान और परख सुविधाजनक है। मानव वैज्ञानिक ऐसे लोग हैं जो आबादी के इस तरह के हाशिए वाले वर्ग के लिए खड़े हो सकते हैं। आदिवासी जरूरतों और इच्छाओं के बारे में ज्ञान उनके अधिकारों की रक्षा में मदद कर सकते है। इस संदर्भ में मानव विज्ञान, नागरिक अधिकारों के समर्थन (ओलिवियर डे सरदान, 2005) के मुद्दे से संबंधित है।

मानव विज्ञान का प्रायोगिक आयाम भी मुख्य रूप से द्वितीय विश्व युद्ध (ईम्स और गुडे, 1977) से प्रभावित था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यह महसूस किया गया कि सहयोगी ताकतों की जीत को तेज करने के लिए मानव विज्ञान संबंधी ज्ञान और विधियों का उपयोग दुश्मन संस्कृति को समझने के लिए किया जा सकता है। जापानी संस्कृति को समझने के लिए अमेरिका में जापानी कैदियों पर रुथ बेनेडिक्ट द्वारा ऐसा एक अध्ययन आयोजित किया गया था। इस तरह के अध्ययनों को 'कल्चर एट डिस्टेंस' के अध्ययन के रूप में जाना जाने लगा

क्योंकि इस तरह के एक अध्ययन में मानव वैज्ञानिक दूसरों की भूमि में ना जाकर अपितु अपनी जगह पर ही रहकर इस मामले में युद्ध कैदियों के कुछ सांस्कृतिक प्रतिनिधियों के माध्यम से उनकी संस्कृति का अध्ययन करने की कोशिश कर रहे थे। उनके अध्ययन के आधार पर बेनेडिक्ट ने *क्राइसेंथेमम एण्ड द स्वोर्ड* लिखी। अमेरिका के द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कुछ अन्य मानव वैज्ञानिक द्वारा समान उद्देश्यों के साथ अध्ययन आयोजित किए गए थे, जो लोगों के खाद्य पद्धति के मुद्दे पर केंद्रित थे। ऐसा माना जाता था कि अगर खाद्य पद्धति का अध्ययन किया जाएं और युद्ध के दौरान अधिक आपूर्ति में खाद्य पदार्थों के अनुसार बदल दिया जाए तो खाद्य संकट का समाधान किया जा सकता है। (ईम्स और गूडे, 1977)

1.2.4 सार्वभौमिक बनाम विशिष्ट ज्ञान

इस विषय का बुनियादी अंतर्निहित उद्देश्य वैश्विक के साथ स्थानीय लोगों को जोड़ना है। दूसरे शब्दों में, मानव विज्ञान विशेष रूप से सार्वभौमिक संदर्भों को समझने से विकसित हुआ है। कुछ लोगों का यहाँ तक कहना है कि जब एक मानव वैज्ञानिक विशिष्ट रूप से देखता है तब भी उसका लक्ष्य सार्वभौमिक रहता है। यह उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है जहां एक मानव वैज्ञानिक ने अपने अध्ययन के लिए एक बहुत विशिष्ट समुदाय चुना और इस तरह के एक अध्ययन के आधार पर कुछ बुनियादी प्रश्नों के उत्तर दिए, जो कि प्रकृति में अधिक मौलिक हैं।

विशेष ज्ञान प्राप्त करने से जानकारी के साथ तुलना के उद्देश्य को भी पूरा किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि मानव वैज्ञानिक का उद्देश्य समाज में महिलाओं की स्थिति को समझना है तो वह सवाल पूछने लगेगी कि अलग-अलग समाजों में महिलाओं की स्थिति क्या है? विभिन्न समाजों के उत्तर प्राप्त करने के बाद, वह किसी तरह के निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए उनकी तुलना भी करेंगे। इस तरह के विशेष ज्ञान को वैकल्पिक रणनीतियों और संरचनात्मक सूत्रों का सुझाव देने के रूप में कुछ लाभ भी है जो वर्तमान समस्याओं को हल करने का कारण बन सकता है। उदाहरण के लिए, लिंग समानता का अध्ययन करते समय, यदि समाज में पुरुषों और महिलाओं की समान स्थिति के वैकल्पिक नमूने उपलब्ध हैं तो उनका बड़े पैमाने (बीर्ड-मूस, 2010) पर अनुसरण किया जा सकता है।

इसी प्रकार, समकालीन समाज में धर्म और उसके कार्य को समझना अन्य समाजों में कार्य और धर्म की स्थिति के समान प्रश्नों से शुरू होगा। एक समाज के बारे में यह विशिष्ट / विशेष ज्ञान मौलिक प्रश्नों और अवधारणाओं को फिर से उन्मुख करने और पुनः क्रमबद्ध करने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, कैथलीन गफ ने केरल के नायर्स के बीच विवाह और पारिवारिक पद्धति का अध्ययन किया जिसके कारण शादी की परिभाषा में सुधार हुआ, जिसे तब तक कुछ सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आम निवास के साथ नर और मादा के संघ के रूप में परिभाषित किया गया था।

विशेष ज्ञान का एक और महत्वपूर्ण आयाम जनजातीय समूहों की स्वदेशी ज्ञान प्रणाली का अध्ययन है। इस तरह का स्वदेशी ज्ञान विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक और पारिस्थितिकीय स्थितियों का उत्पाद है जो समय के साथ उत्तरजीविता के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक उपकरण बन जाते हैं। हाल ही में इस स्वदेशी ज्ञान प्रणाली को भारत सरकार द्वारा भी महत्व दिया गया है क्योंकि यह प्राकृतिक आपदाओं के दौरान चरम जीवन की स्थिति के प्रबंधन में बहुत मददगार साबित हुआ है।

कुछ समुदाय दशकों तक बाढ़ और सूखे जैसी आपदाओं के साथ रहे और इसलिए अपने प्रबंधन और लचीलेपन से संबंधित विशिष्ट ज्ञान विकसित कर सके। यह ज्ञान बड़ी आपदा प्रबंधन योजनाओं (आपदा प्रबंधन पर राष्ट्रीय नीति, 2009) के साथ एकीकृत है। इसी प्रकार औषधीय पौधों से संबंधित स्वदेशी ज्ञान और कुछ बीमारियों के इलाज के लिए उनके उपयोग का बहुत महत्व है।

अपनी प्रगति को जांचें 2

4) मानव विज्ञान का मुख्य उद्देश्य क्या है?

....

....

....

5) संस्कृति सापेक्षता क्या है?

....

....

....

6) 1920 के दशक में सामोआ के बीच किशोर व्यवहार का अध्ययन किसने किया?

....

....

....

1.3 मानव विज्ञान के विषय क्षेत्र

1.3.1 शहरी मानव विज्ञान

पूर्व में अधिकांश मानव विज्ञान अध्ययन अलग-अलग सामाजिक समूहों पर आयोजित किए जाते थे जिन्हें 'जनजाति' कहा जा सकता है। आज भी मानव वैज्ञानिक ने ऐसे समूहों का अध्ययन करने के लिए पूरी तरह से अपने अधिकार क्षेत्र का त्याग नहीं किया है क्योंकि इन आदिवासी समूहों के बीच स्वतंत्र शोधकर्ताओं और समूहों द्वारा योजनाबद्ध मानव विज्ञान क्षेत्र की अधिकांश गतिविधियां आयोजित की जाती हैं। हालांकि इन समूहों के मानवजाति विवरणात्मक खाते को पूरा करने के अलावा, मानव वैज्ञानिक भी ऐसे समुदायों के बीच होने वाले विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तनों को समझने में रुचि रखते हैं।

विशेष रूप से 1960 के दशक के बाद इस विषय का दायरा भी बढ़ गया है जब मानव विज्ञान की एक नई उप-शाखा शहरी मानव विज्ञान (ईम्स और गुडे, 1977) के रूप में जाना जाने लगा। शहरीकरण की तेज रफ्तार की प्रक्रिया के रूप में, शहरी केंद्रों ने बेहतर आजीविका के अवसरों की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों की आबादी को आकर्षित किया। इसके अलावा, विकास की प्रक्रिया को महत्व देने के साथ, जनजातियों और किसान समुदायों से उनसे संबंधित बहुत से जंगलों और कृषि भूमि बांध, खानों आदि के निर्माण के लिए ली गईं, जिससे

इन समुदायों का बड़े पैमाने पर स्थानांतरण और विस्थापन हुआ। ऐसे समुदायों के साथ शहरी क्षेत्रों में प्रवास करने के साथ, मानव वैज्ञानिक ने भी इन क्षेत्रों पर अपना ध्यान बदल दिया और इसलिए उनका अध्ययन 'शहरों में किसान' (ईम्स और गुडे, 1977) पर केंद्रित हो गया। इस तरह के अध्ययनों ने मुख्य रूप से प्रवासी समुदाय के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की अनुकूलता जो उनके प्रवास के साथ आता है पर ध्यान केंद्रित किया ।

पुरातत्व के अध्ययन ने शहरी मानव विज्ञान में भी योगदान दिया। पुरातत्त्वविद शहरी केंद्रों के उभरने और उनके उभरने के कारणों के अध्ययन से अधिक चिंतित हैं। इस तरह का अध्ययन उन प्रक्रियाओं को समझने की पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण हो गई है जो शहरी सभ्यताओं (ईम्स और गुडे, 1977) की ओर अग्रसर हैं।

1.3.2 मानव विज्ञान पद्धतियाँ

मानव विज्ञान के प्रायोगिक आयाम ने समुदायों की समस्याओं को हल करने के लिए मानव विज्ञान के तरीकों को लागू करके अपने दायरे को बढ़ा दिया है। प्रायोगिक मानव विज्ञान विशेष समस्याओं को संबोधित करने के लिए तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन (आरआरए) और सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन (पीआरए) जैसे उपकरणों का उपयोग करता है और फिर समाधान का सुझाव देता है। (त्वरित) ग्रामीण मूल्यांकन के तहत एक ग्रामीण समुदाय की समस्याओं का त्वरित आकलन उनके परिस्थितियों में समयबद्ध परिवर्तन लाने के लिए किया जाता है। सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन के अन्तर्गत अंदरूनी व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य की मानव विज्ञान धारणा को उपयोग किया जाता है (बर्नार्ड, 2006)। सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन तकनीकों के तहत् लोग अपनी समस्याओं के अर्थ और सीमा पर बातचीत करने और समाधान का सुझाव देने में भाग लेते हैं।

उदाहरण के लिए बाढ़ से प्रभावित लोग एक साथ बैठ सकते हैं और विविध मानचित्र तैयार कर सकते हैं। उन क्षेत्रों को और उनके आसपास के इलाकों में चिह्नित कर सकते हैं जो बाढ़ से अधिक प्रभावित हैं। इसी प्रकार, वे सुरक्षित मार्ग-मानचित्र तैयार कर सकते हैं जो आपात स्थिति (खत्री, 2012) के मामले में वैकल्पिक मार्ग प्रदान कर सकते हैं। सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन इस धारणा पर आधारित है कि 'लोग सर्वश्रेष्ठ जानते हैं'। मध्य भारतीय बेल्ट में बहुत से जनजातीय समुदायों को बांध, खनन, वन उत्पादन विशेष रूप से लकड़ी आदि के रूप में विकास गतिविधियों के बहस पर अपनी भूमि से विस्थापित कर दिया गया है क्योंकि ये क्षेत्र खनिज और वन संसाधनों में समृद्ध हैं। मानव वैज्ञानिक ऐसी प्रक्रियाओं का अध्ययन कर रहे हैं और इस तरह के जनजातियों के अधिकारों के लिए समर्थन कर रहे हैं।

1.3.3 व्यवसायिक प्रबंधन

मानव विज्ञानविदों ने व्यवसाय प्रबंधन और आपदा प्रबंधन के नए और चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में प्रवेश किया है। समाज और संस्कृति की जुड़वां अवधारणा मानव विज्ञान अध्ययन की पहचान रही है। मानव विज्ञानविदों को संस्कृति, समाज और इन प्रणालियों में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों को समझने में विशेषज्ञ माना जाता है। प्रबंधन मानव विज्ञान का क्षेत्र अंतर-सांस्कृतिक (क्रॉस कल्चरल) व्यापार और व्यावसायिक प्रथाओं को समझने में मानव वैज्ञानिक की इस विशेषता का उपयोग करता है। व्यापार न केवल आर्थिक लेनदेन तक सीमित है बल्कि यह एक गतिशील व्यवहार पहलू पर विचार प्रस्तुत करता है। लोग एक-दूसरे से मिलते हैं, बातचीत करते हैं और अरबों डॉलर के सौदे को हासिल करते हैं। इन व्यवहारिक पहलुओं को

मानववैज्ञानिकों द्वारा सबसे अच्छी तरह से समझा जाता है। प्रबंधन-संबंधी मुद्दों का अध्ययन करते समय सूक्ष्म स्तर पर एथनोग्राफी और आंतरिक अध्ययन की मानव विज्ञान पद्धति आसान होती है। मानव विज्ञान उपकरण की पूरी श्रृंखला मूल रूप से तीन स्तरों पर लागू की जा सकती हैः

1) एक बहुराष्ट्रीय कॉर्पोरेट बिजनेस हाउस की संगठनात्मक संरचना और संस्कृति को समझने के स्तर पर।

2) अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए उत्पाद डिजाइन को बढ़ाने के लिए उपभोक्ताओं और ग्राहकों के व्यवहार को समझने के स्तर पर।

3) समाज में जीवन शैली और सामाजिक संस्थानों जैसे परिवार, विवाह पद्धति आदि पर बाजार संस्कृति के प्रभाव को समझने के स्तर पर।

तुलनात्मक विधि, मानव विज्ञान उपकरण के रूप में क्रॉस-कल्चर तुलना का अवसर प्रदान करता है और एक संगठन (खत्री, 2012) के विपणन और संगठनात्मक सेट-अप के संबंध में सर्वोत्तम प्रथाओं के सामान्यीकरण तक पहुंच प्रदान करता है।

1.3.4 आपदा प्रबंधन

मानव विज्ञानविदों के पास आपदा प्रबंधन की दिशा में योगदान करने के लिए बहुत कुछ है। आपदाएं वैश्विक स्तर पर बढ़ रही हैं जिसके परिणामस्वरूप संपत्ति और जीवन का बड़े पैमाने पर नुकसान होता है। कुछ समय बाद यह महसूस किया गया कि आपदा प्रबंधन को आपदा आने के बाद के राहत कार्यक्रमों की बजाय पहले ही उससे निपटने की लगातार कोशिश करनी चाहिए। अब के समय में विभिन्न सामाजिक समूहों के जोखिम और कमजोरियों को कम करने के प्रयास किए जा रहे हैं। कुछ लोग गरीबी, लिंग, आयु, सामाजिक पूंजी, और भौतिक स्थान के आधार पर दूसरों की तुलना में अधिक कमजोर होते हैं। आपदाएं, शारीरिक या प्राकृतिक घटना होने की बजाय, खतरों और सामाजिक-स्थानिक कमजोरियों का एक परिणाम है। मानव वैज्ञानिकों ने कमजोरियों में कमी (खत्री, 2012) के तरीकों का अध्ययन और सुझाव देकर आपदा प्रबंधन की दिशा में योगदान दिया है।

1.3.5 जैविक/शारीरिक मानव विज्ञान

चूंकि, मानव विज्ञान एक समग्र अध्ययन का विषय है, जैविक इकाइयों के रूप में मनुष्यों का अध्ययन भी इस विषय के अन्तर्गत आता है। यहां मानव वैज्ञानिक मुख्यतः मानव जीवाश्मों के वैज्ञानिक अध्ययन और मानव आनुवंशिकी से काफी हद तक चिंतित हैं। मानव जीवाश्मों के वैज्ञानिक अध्ययन में मानव जीवाश्मों पर अध्ययन किए जाते हैं और मनुष्यों के विकासवादी इतिहास को जानने के लिए प्रयास किया जाता है। (एम्बर एवं अन्य, 2002)

मानव जीवाश्मों के अध्ययन का क्षेत्र मनुष्यों से भी जुड़ा हुआ है क्योंकि यह जड़ों और प्रस्थान के बिंदुओं का पता लगाने की कोशिश करता है जिससे आधुनिक मानव (एम्बर एट अल, 2002) का विकास हुआ। मानव आनुवांशिकी का क्षेत्र मानवीय विविधता, क्षेत्रों में रोग वितरण और आनुवांशिक स्तर पर मानव अनुकूलन को समझने की कोशिश करता है। मानव विकास और पोषण जैसे क्षेत्र हैं जहां भौतिक/जैविक और सामाजिक-आर्थिक दोनों आयाम एकीकृत हो जाते हैं। सामाजिक और आर्थिक कारकों जैसे आय, समूह की स्थिति और सामाजिक पूंजी (एम्बर एवं अन्य, 2002) द्वारा विकास और पोषण प्रभावित होते हैं।

1.3.6 पुरातात्विक मानव विज्ञान

पुराने अतीत के समाजों और संस्कृतियों का अध्ययन भी मानव विज्ञान के अधीन आता है। इस शाखा को पुरातात्विक मानव विज्ञान कहा जाता है। इस शाखा में मुख्य जोर उन समाजों के आधार पर पिछले समाजों के पुनर्निर्माण पर है जो कलाकृतियों, गुफा चित्रों आदि के रूप में प्रकट हुए हैं। मानव वैज्ञानिक उन लोगों की जीवन शैली का पुनर्निर्माण करने का प्रयास करते हैं जिन्होंने या तो कोई लिखित रिकॉर्ड नहीं छोड़ा है या जिन लोगों ने लेखन सामग्री छोड़ दिया है लेकिन जिसे अभी तक समझा नहीं जा सका है। (एम्बर एवं अन्य, 2002)

अपनी प्रगति को जांचें 3

7) मानव विज्ञान के व्यवहारिक आयाम क्या हैं?

....

....

....

8) पी.आर.ए (सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन) विधि क्या है?

....

....

....

1.4 महत्व

मानव विज्ञान हमें मानव की सांस्कृतिक और जैविक विविधताओं से परिचित कराता है। यह एहसास हमें समाज में विभिन्न समूहों की आकांक्षाओं के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है। गहराई से क्षेत्र कार्य और प्रतिभागी अवलोकन के मानव विज्ञान पद्धति लोगों के अनुभवों को आवाज देने के रूप में महत्वपूर्ण परिणाम सामने लाती हैं। इस तरह के तरीकों को इतिहास जैसे अन्य विषयों द्वारा भी अपनाया जाता है। इन विधियों का उपयोग करके विभिन्न उत्पीड़ित समुदायों के मौखिक इतिहास उत्पन्न किए जाते हैं। यह 'राजनीतिक जनता' के उद्भव की पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण होता है।

जनजातीय समाजों के साथ एक मानव विज्ञान संबंधी चिंता उन्हें बेहतर समझने में मदद करती है और बदले में उनके विकास के लिए बेहतर नीति तैयार करती है। अंग्रेज, मानव विज्ञान में अपने प्रशिक्षण और ज्ञान के कारण भारतीयों पर शासन करने में काफी हद तक सफल हुए । यह विषय इसलिये भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आंशिक और अधिक विशिष्ट समझ के विपरीत मनुष्यों की समग्र समझ का समर्थन करता है। यह किसी भी घटना या घटना की एक पूरी तस्वीर प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए, यदि एक आदिवासी क्षेत्र में किसी बीमारी के लिए एक नई दवा या उपचार आहार शुरू होता है तो उसका विरोध होगा क्योंकि यह दो विश्वव्यापी – आधुनिक चिकित्सा और पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल के रूप में एक-दूसरे के अनुकूल नहीं हैं। मानव विज्ञान समाधान बलपूर्वक परिचय के खिलाफ होगा और यह लोगों को उनके सांस्कृतिक रूपकों के माध्यम से इस तरह के शासन के महत्व को महसूस करने के लिए एक और अधिक प्रचलित दृष्टिकोण देगा।

मानव विज्ञान मानव अस्तित्व की विशिष्टता को पकड़ने की कोशिश करता है। यह विभिन्न संस्कृतियों और समाजों का अध्ययन करता है। वर्तमान वैश्वीकृत संदर्भ में, ऐसे अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि लोग विभिन्न संस्कृतियों के साथ अक्सर बातचीत करते हैं। मानव विज्ञान हमें विभिन्न संस्कृतियों के साथ अधिक समझदार बनाता है और हमें विविधता की सराहना करने में सक्षम बनाता है।

एक मानव वैज्ञानिक जिस तरह के ज्ञान की आकांक्षा रखता है उसकी पूर्ति कम है, क्योंकि मानव विज्ञान अध्ययन के विषय के रूप में काफी देर से उभरा है। अध्ययन के विषय के रूप में इसकी उत्पत्ति 19वीं शताब्दी में हुई। भौतिकी, रसायन शास्त्र और गणित जैसे विषयों की उत्पत्ति और अध्ययन बहुत पहले शुरू हुआ जबकि मनुष्य ने खुद को और अपने व्यवहार को बहुत देर से पढ़ना शुरू किया। मानव विज्ञान मानव वैज्ञानिक को मनुष्य के विभिन्न आयामों पर शोध करने के लिए कहता है जिसमें मानव वैज्ञानिक रुचि रखते हैं और इस प्रकार यह एक अलग अध्ययन के विषय (एम्बर एवं अन्य, 2002) के रूप में महत्व प्राप्त करता है।

1.5 सारांश

मानव विज्ञान एक ऐसा विषय है जो अलग-अलग समय और स्थान में मनुष्य का अध्ययन करता है। यह विभिन्न सांस्कृतिक तुलनाओं की धारणा पर आधारित एक समग्र अध्ययन का विषय है। स्थापना के बाद से ही मानव विज्ञान एक तुलनात्मक विज्ञान रहा है। मानव वैज्ञानिक तुलना की विधि के माध्यम से ऐसे निष्कर्षों पर पहुँचते हैं जो एक सामान्य जीवन में लागू होती है। उनके बीच समानताएं और मतभेदों को समझने के लिए विभिन्न संस्कृतियों और मानव आबादी की तुलना की जाती है। मानव विज्ञान एक अध्ययन नहीं है बल्कि विभिन्न शाखाओं जैसे शारीरिक, सामाजिक और पुरातत्व भाषाविज्ञान का मिश्रण है। ये तीनों शाखाएं आपस में मिलकर मानव अस्तित्व की समग्र तस्वीर प्रदान करने में मदद करती हैं।

मानव विज्ञानी मानव प्रजातियों की उत्पत्ति और विकास को समझने में रुचि रखते हैं। वे यह जानने में भी रुचि रखते हैं कि पर्यावरण संस्कृति को कैसे प्रभावित करता है? और कैसे संस्कृति मानव के विकास और उसके व्यक्तित्व पर असर डालती है? वे मानव भिन्नता के अस्तित्व के बारे में पूछताछ अथवा अन्वेषण करते हैं और विभिन्न बदलावों के कारणों को खोजने का प्रयास करते हैं। वे मानव अतीत और उसकी संस्कृति के पुनर्निर्माण में समान रुचि रखते हैं।

मानव वैज्ञानिक के पास शोध विधियों के रूप में विविध और अद्वितीय उपकरण समूह भी है, जो कि मनुष्यों की उत्पत्ति और विकास से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने में मदद करता है। व्यवहारिक मानव विज्ञान के नए क्षेत्र में मानववैज्ञानिक व्यावहारिक समस्याओं को हल करने में उनके ज्ञान और अनुसंधान के तरीकों का उपयोग करते हैं।

इस विषय का उद्देश्य वैश्विक के साथ-साथ स्थानीय लोगों को जोड़ना है। दूसरे शब्दों में मानव विज्ञान सार्वभौमिक संदर्भों को विशेष रूप से समझने के लिए विकसित हुआ है। यहां तक कहा जाता है कि जब एक मानववैज्ञानिक किसी विषय को विशेष रूप से देखता है तब भी उसका लक्ष्य सार्वभौमिक रहता है।

मानव विज्ञान अनुसंधान की पहचान इसकी क्षेत्रीयकार्य विधि रही है। इस विधि के साथ है मानव वैज्ञानिक 'अन्य संस्कृति' या विभिन्न संस्कृतियों को बेहतर तरीके से समझने में सक्षम हैं। चूंकि, मानव विज्ञान एक नये अध्ययन का विषय है इसलिए इसे अपने ज्ञान आधार को अधिक समृद्ध करने के लिए अभी और अधिक अनुसंधान की आवश्यकता है जिससे यह वर्तमान वैश्विक चुनौतियों को पूरा कर सके।

1.6 संदर्भ

बियर्ड –मूस सी टी। 2010. *"फेमिनिस्ट एंथ्रोपोलॉजी"* इन बिर्क्स एच जे (सं). *21जी सेंचुरी एंथ्रोपोलॉजीः* अ रेफरेंस हैंडबुक. खंड II. कैलिफोर्निया.

बर्नार्ड एच.आर 2006. *रिसर्च मेथड इन एंथ्रोपोलॉजीःक्वालिटेटीव ऐण्ड क्वान्टिटेटिव.* अल्टामिरा प्रेस. ब्रिटेन.

ईम्स ई.एवं गूड जे.जी (सं) 1977. *एंथ्रोपोलॉजी ऑफ द सिटी : एन इंट्रोडक्शन टू अर्बन एंथ्रोपोलॉजी.* प्रेंटीस– हॉल. न्यू जर्सी.

एम्बर सी आर, एम्बर एम एवं पेरेग्रीन पी एन. 2002. *एंथ्रोपोलॉजी.* पियरसन एजूकेशन. दिल्ली.

हैरिस एम. 2001. *द राइज ऑफ एंथ्रोपोलॉजी थ्योरी.* अल्टामिरा प्रेस. सीए. प्रथम संस्करण 1968.

खत्री, पी. 2012. "एंथ्रोपोलॉजी एण्ड मार्केट " श्रीवास्तव वी. के (सं). *प्रैक्टिसिंग एंथ्रोपोलॉजी : प्रैक्टिसिंग एंथ्रोपोलॉजी एण्ड प्रोग्राम.* इग्नू. नई दिल्ली.

खत्री, पी. 2012. "डिजास्टर मैनेजमेंट "में पांडा .पी (संपा). *प्रैक्टिसिंग एंथ्रोपोलॉजी : डाइवर्स एरेनाज इन प्रैक्टिसिंग एंथ्रोपोलॉजी* . इग्नू. नई दिल्ली.

मैकिन्टॉश जे. आर. 2008. *द एनशियेंट इन्डस वैल्ली : न्यू पर्स्पेक्टीव.* एबीसी–सीएलआईओ. कैलिफोर्निया.

नैशनल पॉलिसी ऑन डिजास्टर मैनेजमेंट. 2009. मिनिस्ट्री ऑफ होम अफेयर. राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण. भारत सरकार. (द पोलिसी इज अवेलेबल ऑनलाइन, ऑन द वेबसाइट ऑफ नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डीजास्टर मैनेजमेंट एनआईडीएमए http:\\nidm-gov-in\policies-asp)

ओलिवियर डी सरदान जे.पी. 2005. *एंथ्रोपोलॉजी एण्ड डेवलपमेंटः अंडरस्टैंडिंग कटेंपरी सोशल* चेंज. जेड बुक्स. लंदन.

रोबेन ए.सी.जी.एम. और स्लुका जेए (सं) 2007. *एथनोग्रॉफिक फील्डवर्क : एन एंथ्रोपोलॉजीकल रीडर.* ब्लैकवेल. अमेरीका.

वुल्फ ई. आर. 1964. *एंथ्रोपोलॉजी.* ट्रस्टी ऑफ प्रिंसटन यूनिवर्सिटी. अमेरीका.

1.7 आपकी प्रगति की जांच के लिए उत्तर

अपनी प्रगति को जांचें 1

1) मानव विज्ञान को चार उप-शाखाओं में बांटा गया हैः सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान, जैविक मानव विज्ञान, पुरातत्व और भाषाई मानव विज्ञान।

2) बी मलिनोव्स्की ने गहन क्षेत्र कार्य विधि को लोकप्रिय बनाया ।

3) प्रतिभागी / सहभागी निरीक्षण वह तरीका है जिसमें शोधकर्ता लोगों की दैनिक गतिविधियों में भाग लेता है और साथ ही साथ यह भी देखते हैं कि लोग और उनके विभिन्न संस्थान कैसे काम करते हैं।

अपनी प्रगति को जांचें 2

4) मानव विज्ञान का उद्देश्य छात्रों को जागरूक करना और मानव और सांस्कृतिक विविधताओं की सराहना करना है।

5) प्रत्येक संस्कृति को अपने विशिष्ट संदर्भ में समझा जाना चाहिए और श्रेष्ठ या निम्न संस्कृति की अवधारणा की तरह कुछ भी नहीं है। इसे ही हम सांस्कृतिक सापेक्षता के विचार के रूप में जानते हैं।

6) मार्गरेट मीड।

अपनी प्रगति को जांचें 3

7) मानव विज्ञान के व्यावहारिक आयाम ने समुदायों की समस्याओं को हल करने के लिए मानव विज्ञानी तकनीकों को लागू करके अपने दायरे को व्यापक बना दिया है।

8) सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन (पीआरए) एक ऐसी पद्धति है जिसका लक्ष्य ग्रामीण परियोजनाओं के विकास और प्रबंधन के लिए विकास परियोजनाओं और कार्यक्रमों में शामिल करना है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 2 मानव विज्ञान की शाखाएं*

इकाई की रूपरेखा

2.0 परिचय

2.1 शारीरिक/जैविक मानव विज्ञान

2.1.1 इतिहास और विकास

2.1.2 अध्ययन के वर्तमान क्षेत्र

2.2 सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान

2.2.1 इतिहास और विकास

2.2.2 अध्ययन के वर्तमान क्षेत्र

2.3 पुरातात्विक मानव विज्ञान

2.3.1 इतिहास और विकास

2.3.2 अध्ययन के वर्तमान क्षेत्र

2.4 भाषाई मानव विज्ञान

2.4.1 इतिहास और विकास

2.4.2 अध्ययन के वर्तमान क्षेत्र

2.5 सारांश

2.6 संदर्भ

2.7 आपकी प्रगति की जांच के लिए उत्तर

सीखने के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित बातों को समझने में सक्षम होंगे :

- मानव विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की समझ;
- मानव विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के बीच अन्तरसम्बंधों का आलोचनात्मक मूल्यांकन; और
- विषय के मौजूदा अध्ययन क्षेत्र की समझ।

2.0 परिचय

मानव विज्ञान एक समग्र और बहुआयामी अनुशासन है जो समग्रता में मनुष्य के अध्ययन से संबंधित है। यह न केवल प्रकृति के एक हिस्से के रूप में बल्कि जैविक और सामाजिक विशेषताओं के संदर्भ में एक गतिशील प्राणी के रूप में भी मनुष्य का अध्ययन करता है। मानव विज्ञान समग्र है क्योंकि यह संस्कृति और समाज के सभी पहलुओं उदाहरण के लिए, धर्म, सामाजिक जीवन, राजनीति, स्वास्थ्य और प्रौद्योगिकी का अध्ययन एक एकीकृत और व्यापक तरीके से करता है।

* डॉ. रमीज़ा हसन, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान विभाग, मधाब चौधरी कॉलेज, बारपेटा, असोम

मानव विज्ञान को मनुष्य के तुलनात्मक अध्ययन के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि यह मानव शरीर, व्यवहार और सभी मानव समूहों के मूल्यों में समानताएं और अंतर को ध्यान में रखता है। मानव विज्ञान के व्यापक दायरे और विशालता को समझने के लिए इसको चार शाखाओं में विभाजित करना आवश्यक है। मानव विज्ञान की चार शाखाएं हैं:

- जैविक/भौतिक मानव विज्ञान
- सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान
- पुरातात्विक मानव विज्ञान
- भाषाई मानव विज्ञान ।

मानव विज्ञान, अपनी चार शाखाओं के साथ-साथ मानविकी, सामाजिक विज्ञान, जैविक विज्ञान और भौतिक विज्ञान के साथ अंतःस्थापितता और अंतर-संबंध सुनिश्चित करके अपने समग्र अभिविन्यास को बरकरार रखता है।

2.1 भौतिक/जैविक मानव विज्ञान

शारीरिक मानव विज्ञान, जिसे अब जैविक मानव विज्ञान के रूप में जाना जाता है, मानव विज्ञान की सबसे पुरानी शाखा है। शारीरिक मानव विज्ञान मानव शरीर, आनुवांशिकी और जीवित प्राणियों के बीच मनुष्य की स्थिति का अध्ययन करता है। जैसा कि नाम इंगित करता है, यह मनुष्य की भौतिक विशेषताओं का अध्ययन करता है। यह जीवविज्ञान के सामान्य सिद्धांतों का उपयोग करता है और शरीर रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान, भ्रूण विज्ञान, प्राणीशास्त्र, जीवाश्म विज्ञान और अन्य के निष्कर्षों का उपयोग करता है। पॉल ब्रोका (1871) प्रसिद्ध जीववैज्ञानिक ने भौतिक मानवविज्ञान को इन शब्दों में परिभाषित किया है "विज्ञान का मुख्य उद्देश्य मानवता, इसके विभिन्न भाग और इनका प्रकृति के साथ अन्तर्निहित संबंधों का पूर्ण अध्ययन है।" (बसु रॉय में उद्धृतः 2012:5) हर्सकोविट्स के अनुसार "शारीरिक मानव विज्ञान, संक्षेप में, मानव जीवविज्ञान है।" पिडिंगटन कहते हैं, "शारीरिक मानव विज्ञान के अध्ययन का मुख्य विषय मानव जाति के वर्गीकरण और विशेषताओं से है।" भौतिक मानव विज्ञान में अध्ययन का एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है मानव विकास, जो यह दिखाता है कि मानव शरीर विभिन्न चरणों के माध्यम से कैसे विकसित हुआ है। (दास में उद्धृतः 1996: 3)

शारीरिक मानव विज्ञान प्रारंभ में मानव शरीर और मानव कंकाल पर माप और अवलोकन के अध्ययन के लिए समर्पित था। आज भौतिक या जैविक मानव विज्ञान में निम्नलिखित बातें भी शामिल हैं:

- विकासवादी जीवविज्ञान और मानव आनुवांशिकी का अध्ययन
- आधुनिक मनुष्यों की उत्पत्ति को समझने के लिए मनुष्य का वानर से क्रमबद्ध (होमोनिड) विकास
- मानव आबादी में जैविक अंतर
- मानव विकास और विकास पर जैव-सांस्कृतिक अवलोकन।

2.1.1 इतिहास और विकास

यद्यपि मनुष्य के भौतिक पहलुओं का अध्ययन ''इतिहास के जनक'' हेरोडोटस के समय से किया गया है। लेकिन भौतिक मानव विज्ञान एक व्यवस्थित विज्ञान के रूप में केवल 19वीं शताब्दी के मध्य के उत्तरार्ध में विकसित हुआ था।

हेरोडोटस (484 ई.पू से 425 ई.पू) ने अपने लेखों में मिस्र और फारस के लोगों की मानवीय खोपड़ी में मतभेदों का उल्लेख किया था जिसके लिए उन्होनें पर्यावरण को जिम्मेदार ठहराया। हिप्पोक्रेट्स (460 ई. पू. से 377 ई. पू) जो कि ''भौतिक मानव विज्ञान के पिता'' हैं और भौतिक मानव विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी हैं, उन्होंने भौतिक मानव विज्ञान के क्षेत्र में कई योगदान दिए जिनमें से दो क्रमशः *डी नेचुराहोमिनिस* और *डी एराएक्विसेट लोकी* मानववैज्ञानिकों के लिए विशेषकर रुचिकर हैं।

अरस्तु (384 ई.पू -से 322 ई.पू) जिनका अध्ययन जीवविज्ञान पर आधारित था। इन्होंने मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी के रूप में देखा। यद्यपि मनुष्य के शारीरिक और मानसिक संरचना पर उनका किया गया कार्य धार्मिक रूढ़ि और दर्शन के सिद्धांतों से प्रभावित नहीं था। यद्यपि, उन्होंने मनुष्य को जानवरों के बीच रखा फिर भी उन्होंने मस्तिष्क के सापेक्ष उनके आकार, दबाने वाली चाल और मानसिक पात्रों जैसी उनकी विशिष्ट विशेषताओं पर भी ध्यान दिया। रोम में गैलेन (131-200 एडी) ने मांसपेशियों, नसों, रूण गठन आदि पर लेखों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की। एंड्रियास वेसालियस (1514-1564) ने मनुष्यों और लंगूरों की विभिन्न रचनात्मक विशेषताओं का अध्ययन किया जिसने उन दिनों के रचनात्मक अध्ययनों में एक क्रांति पैदा की थी। मानव शरीर रचना पर उनका अध्ययन प्रत्यक्ष अवलोकन पर आधारित था और वह विभिन्न विचारों को प्रस्तुत करने में सक्षम था। उन्होंने ही आधुनिक शरीर रचना की नींव रखी।

17वीं शताब्दी के आस-पास बहुत अधिक अध्ययन किए गए थे, जिनमें से जोहान स्परलिंग के फिजिकल एंथ्रोपोलेजिया (1668) और सैमुअल हाउर्थ के *एंथ्रोपोलेजिया* या *फिलॉसॉफिकल डिस्कोंस कंसर्निंग मैन* (1680) उल्लेखनीय हैं। लगभग उसी समय एडवर्ड टायसन (1650-1708) रॉयल सोसाइटी के एक साथी जिनका मुख्य उद्देश्य तुलनात्मक रूपरेखा पर था, ने शरीर रचना पर पहला व्यवस्थित शोध किया था। उनका काम *ओरंग-औटांग, सिवे होमो सिल्वेस्ट्रीसः* और *एनाटॉमी ऑफ ए पिगमि कम्पेयर्ड विद दैट ऑफ ए मंकी, एन एप एन्ड ए मैन* (1699) को मानव विज्ञान में कपियों की शरीर रचना पर विश्लेषणात्मक अध्ययन का पहला प्रयास माना जाता है।

18वीं शताब्दी लिनिअस, बफॉन और *ब्लूमेंबैक* द्वारा किए गए उत्कृष्ट योगदान से उल्लेखनीय हैं। स्वीडिश कार्ल लिनिअस (1707-1778) अपने अमर कार्य *सिटेमा नेचर* ने प्रत्येक जीवित जीव को दो लैटिन नामों (बाइनरी नामकरण), जीनस के लिए एक और अन्य प्रजातियों (स्पीशीज) के लिए नामित किया। लिनिअस के दिनों से मनुष्य को वैज्ञानिक रूप से होमोसेपियंस के रूप में जाना जाता है। लिफियस के फ्रांसीसी समकालीन बफान (1707-1780) ने जैविक दुनिया में अपने विशाल काम *हिस्टोरिक नैचुरलै* में विभिन्न परिवर्तनों पर चर्चा की।

लेकिन, यह एक फ्रांसीसी लैमार्क (1744-1829) थे जो मानवजाति के अध्ययन हेतु वानर से मनुष्य के वंशज पर अवलोकन के लिए साहसपूर्वक साथ और आगे आये थे। लैमार्क ने मानव

विकास के लिए कभी-कभी वानरों द्वारा ग्रहण किए गए व्यक्ति की इरेक्स्टिक पोश्वर (i) (खड़ी मुद्रा) को काफी महत्व दिया। लैर्माक को उनके सिद्धांत के लिए याद किया जाता है जिसमें उन्होंने एक व्यक्ति के जीवनकाल के दौरान विकसित विशेषताओं को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया है। जेएफ ब्लूमेंबैक (1752-1840) 'भौतिक मानव विज्ञान के पिता' के रूप में जाना जाते हैं, जो कपाल विज्ञान के असली संस्थापक थे। उन्हें अपने प्रकाशन *डेकडेस क्रैनोरम* के माध्यम से एक कपाल वैज्ञानिक के रूप में मान्यता मिली।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान, ब्रोका, फाउलर और टर्नर जैसे मानव वैज्ञानिक ने कपाल विज्ञान अध्ययन में ब्लूमेंबैक के मार्ग का अनुसरण किया। जे.सी. प्रिचर्ड (1786-1848) ने अपने शोध "रिसर्च इन टू द फिजिकल हिस्ट्री ऑफ मैन" (1848) में मानव जाति पर कुछ वर्गीकृत और व्यवस्थित तथ्यों को उजागर किया। सैमुअल जॉर्ज मॉर्टन (1786-1848) मानव भौतिक विविधता का अध्ययन करने के लिए मानव विज्ञान मापों का उपयोग करते थे। वर्ष 1859 मानव विज्ञान के इतिहास में अत्यधिक उल्लेखनीय है। चार्ल्स डार्विन की पुस्तक" *ओरिजिन ऑफ स्पेसीस"* (प्रजातियों की उत्पत्ति) के प्रकाशन के साथ लोगों की सोच में बड़े स्तर पर परिवर्तन हुआ।

सोसाइटी डे एंथ्रोपोलॉजी डे पेरिस की स्थापना 19 मई 1859 को हुई थी और फ्रांसीसी मानव विज्ञानी और चिकित्सक पॉल ब्रोका (1824-1880) को इसका सचिव नियुक्त किया गया था। उन्होंने कपाल मानवमिति के अध्ययन की विभिन्न पंक्तियों पर नई रोशनी डाली। 1880 के बाद से ब्रोका के एक मित्र और सहयोगी जोसेफ डेनिकर ने विश्व जनसंख्या में नस्लीय विशेषताओं पर अपने अध्ययन से 29 नस्लीय प्रजातियों को मान्यता दी। जर्मनी में विर्चो (1821-1902) ने खोपड़ी रोगविज्ञान पर अपने कार्यों के माध्यम से भौतिक मानव विज्ञान के क्षेत्र में योगदान दिया। लैंडस्टीनर ने मानव रक्त समूहों के अध्ययन के आधार ने मानव विज्ञान के विश्लेषण में एक नया परिदृश्य खोला। अमेरिका में स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूट में भौतिक मानव विज्ञान के विकास की दिशा में एलिस हर्डलिके (1860-1943) के योगदान को कभी कम नहीं आंका जा सकता है। इनके अथक प्रयास से 1918 में *अमेरिकन जर्नल ऑफ फिजिकल एंथ्रोपोलॉजी* की स्थापना हुई। इन्होंने1930 में अमेरिकन *एसोसिएशन ऑफ फिजिकल एंथ्रोपोलॉजिस्ट* की स्थापना में भी योगदान दिया ।

समय के साथ मानव विज्ञान का अध्ययन और उसमें और अधिक विशिष्टता हासिल करने में वीनियेर, एशली मोन्टागू, हूटन, बार्नएट और जुक्करमैन ने मानव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान दिया। मानव विज्ञान का आधुनिक दौर 19वीं शताब्दी के आरंभ में हुआ। *फ्रांज़ बोआस* (1858-1942) ने मानव जाति के अध्ययन के लिए उनकी संस्कृति पर जोर दिया। मानव जाति की समस्याओं के समाधान में विभिन्न मानव वैज्ञानिक जैसे हुक्सली एन्ड हैडन (*वी यूरोपियन,* 1935), डाहल्बर्ग (*रेस, रीजन एण्ड रब्बीश,* 1942) , एशली मोन्टागू (*मैन मोस्ट डेंजरस मिथ,* 1945), वॉशबर्न (*द रेसेज ऑफ यूरोप,* 1945), बोयड (*जेनेटिक्स एण्ड द रेसेज ऑफ मैन,* 1950) ने अलग-अलग दृष्टिकोणों से योगदान दिया। यूनेस्को के प्रजाति की प्रवृति और भिन्नता के अध्ययन और विश्लेषण पर 1952 का कथन विभिन्न मानव वैज्ञानिकों और आनुवंशिकी वैज्ञानिकों के एकीकृत दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है, जो 1956 में *"द रेस क्वेशचन इन मॉडर्न साईंस"* में प्रकाशित हुआ। (सरकार, 1997)

1939 में डब्ल्यू.एम क्रोगमैन के मानव विज्ञान में अग्रणी कार्य से फोरेंसिक मानव विज्ञान का एक विशेष शाखा के रूप में विकास हुआ। 1965 में कैरले ने मानव कंकाल की सहायता से

मानव की मृत्यु के समय उनके उम्र के अनुमान पर अपना शोध कार्य प्रकाशित किया। एटिलक्विस्ट एण्ड डैमस्टर्न (1975) और थॉम्पसन (1979) ने इस विधि में और सुधार किया। 1978 में अमेरिकन बोर्ड ऑफ फोरेंसिक एंथ्रोपोलॉजी की स्थापना हुई। शेरवुड वॉशबर्न ने 1950 और 1960 के दशक के दौरान कार्य क्षेत्र विधि की परंपरा को पुनः परिचित कराया जिससे समकालीन मानव विज्ञान के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ ।

2.1.2 अध्ययन के वर्तमान क्षेत्र

भौतिक या जैविक मानव विज्ञान के अध्ययन ने नई ऊंचाइयों को हासिल किया है क्योंकि इसके विकास के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों के व्यवस्थित अभिविन्यास पर अधिक जोर दिया गया है।

पुरापाषाण कालीन-मानव विज्ञान

पुरापाषाण कालीन-मानव विज्ञान, या मानव विकासवादी अध्ययन, मानव जाति के जैविक इतिहास के लिखित प्रमाण पर ध्यान केंद्रित करता है। मनुष्य के मानव विकासवादी इतिहास को पृथ्वी के विभिन्न परतों से एकत्रित जीवाश्म कंकाल अवशेषों के अध्ययन के आधार पर एक पुरापाषाण कालीन-मानव वैज्ञानिक द्वारा पुनर्निर्मित किया जाता है। पुरापाषाण कालीन -मानव वैज्ञानिक इस प्रकार मनुष्य और वानर की तुलनात्मक शारीरिक रचना में विशेषज्ञ हैं और वे विभिन्न क्षेत्रों से जीवाश्म अवशेषों को एकत्रित करके उनका मूल्यांकन करते हैं और अपनी स्थिति और विकासवादी सोच को स्थापित करते हैं।

पुरापाषण कालीन-आरम्भिक मानव विज्ञान (प्राइमोटोलॉजी)

पुरापाषाण कालीन-आरम्भिक मानव विज्ञान जीवित और आरंभिक वानर जीवाश्म के अध्ययन से संबंधित है। आरम्भिक जीवाश्म विविधताओं से पूर्ण है जिसमें सभी जानवर और मानव शामिल हैं तथा यह मानव विज्ञान के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करता है। इसलिए आरंभिक जीवाश्म का एक एकीकृत अध्ययन मनुष्य की स्थिति को समझने में मदद करता है। इस तरह के अध्ययनों के माध्यम से हमारे निकटतम रहने वाले प्राणियों को संरक्षित करने के प्रयास किए जाते हैं।

अस्थि विज्ञान

अस्थि विज्ञान हड्डियों के अध्ययन का विज्ञान है। एक अस्थि विज्ञान विशेषज्ञ हड्डी की संरचना, कंकाल और आकारिकी का अध्ययन करता है और मानव अवशेषों की आयु, लिंग, विकास और मृत्यु का पता लगाता है।

मानव आनुवांशिकी

ई.सी. कॉलिन के मुताबिक, ''आनुवांशिकी जीवविज्ञान की वह शाखा है जो पौधों, जानवरों और मनुष्यों में देखी गई आनुवंशिकता और विविधता के सिद्धांतों के नियमों से संबंधित है। मानव आनुवंशिकी, मानव आनुवंशिकता का अध्ययन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आनुवंशिकता की प्रक्रिया के माध्यम से प्रसारित मानव भौतिक विशेषताओं को समझना है। ''(दास, 1996: 3-4)। मानव आनुवांशिकी मानव प्रजातियों के जीवविज्ञान को समझने के लिए सैद्धांतिक रूपरेखा प्रदान करता है। मानव आनुवांशिकी के अध्ययन की शुरूआत के परिणामस्वरूप जैविक मानव विज्ञान के रूप में भौतिक मानव विज्ञान को नामित किया गया।

मानव आनुवांशिकी में वंशानुगत लक्षणों और मानव विरासत की प्रकृति के संचरण के नियमों का अध्ययन परिवारों, वंशावली और आबादी के व्यवस्थित अध्ययन के माध्यम से किया जाता है। मानव आनुवांशिकी मानव जीन की क्रिया और अभिव्यक्ति, लिंग के अनुवांशिक पहलू, और नए वंशानुगत विविधताओं की उत्पत्ति पर पर्यावरण के प्रभाव से भी चिंतित है। मानव आनुवांशिकी के अध्ययन के माध्यम से हम जन्मजात प्रकृति की विरासत को समझने में सक्षम हैं जो हमें अपने साथी मनुष्यों से अलग करता है। इस प्रकार हम उस प्रक्रिया का पता लगा सकते हैं जिसके माध्यम से वंशानुगत समानताएं और मतभेद पीढ़ी दर पीढ़ी तक हस्तांतरित होते हैं।

जनसंख्या आनुवंशिकी

आनुवंशिक परिप्रेक्ष्य में एक जनसंख्या को ''यौन वर्ण संकर निषेचित व्यक्तियों का एक प्रजनन समुदाय जो अपने सामान्य जीन समूह को साझा करते हैं '' के रूप में परिभाषित किया जाता है। (सरकार में उद्धृतः 1997:53) जनसंख्या अध्ययन विकास की प्रक्रियाओं, प्राकृतिक चयन, अनुवांशिक बहाव, जीन प्रवाह और उत्परिवर्तन की प्रक्रियाओं की समझ प्रदान करता है। युग्मविकल्पी जनसंख्या में आवृत्ति, वितरण और परिवर्तन के अध्ययन के माध्यम से नई प्रजातियों के विकास की प्रक्रिया और उनके अनुकूलन को इस तरह के अध्ययनों में भी ध्यान में रखा जाता है।

आण्विक मानव विज्ञान

आण्विक मानव विज्ञान सभी मौजूदा आबादी के तुलनात्मक अध्ययन से संबंधित है। आण्विक विश्लेषण और डीएनए अनुक्रम के उपयोग के माध्यम से, पहले और समकालीन मनुष्यों के बीच अंतर-संबंध को समझने के प्रयास किए जाते हैं।

मानव भिन्नता

मानव जीवविज्ञान मुख्य रूप से मानव भिन्नता का अध्ययन करता है। मनुष्य में भिन्नता पूर्वजों और पर्यावरण की क्रिया से विशेष विशेषताओं की विरासत द्वारा बनाई जाती है। इस प्रकार मानव भिन्नता के अध्ययन में जीनों और पर्यावरण के प्रभावों को ध्यान में रखा जाता है।

मानव विकास और विकास

यह क्षेत्र मानव विकास और विकास के विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने में सक्षम बनाता है। मानव विकास और विकास आनुवांशिकता, पोषण और पर्यावरण जैसे विभिन्न कारकों पर निर्भर हैं। मानव विकास और विकास के अध्ययन में इन सभी कारकों को ध्यान में रखा जाता है।

मानव पारिस्थितिकी

मानव पारिस्थितिकी आबादी और उनके पर्यावरण और अन्य जीवित जीवों के साथ ऊर्जा आदान-प्रदान के बीच संबंध पद्धति के अध्ययन से संबंधित है। प्राकृतिक पर्यावरण के लिए मानव अनुकूलन और समायोजन की पद्धति मानव पारिस्थितिकी के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण पहलू है और इसलिए इसका अध्ययन भौतिक मानववैज्ञानिक के लिए प्रमुख है।

फोरेंसिक मानव विज्ञान

फोरेंसिक मानव विज्ञान कानूनी उद्देश्यों के लिए मानव कंकाल अवशेषों की पहचान के साथ संबंधित है। फोरेंसिक मानववैज्ञानिक मानव अवशेषों के विस्तृत अध्ययन और विश्लेषण के

माध्यम से हत्या पीड़ितों, गायब व्यक्तियों या दुर्घटनाओं और आपदाओं में मारे गए लोगों की पहचान करने में सक्षम हैं। कई मामलों में फोरेंसिक मानववैज्ञानिकों ने ऐसे पीड़ितों की पहचान की है जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों में मानव दुर्व्यवहार के परिणामस्वरूप मारे गए हैं।

जनसांख्यिकी

जनसांख्यिकी का अध्ययन सीधे प्रजनन और मृत्यु दर से संबंधित है और ये दो कारक विशेष रूप से आनुवंशिकता और पर्यावरण से प्रभावित होते हैं। जनसांख्यिकीय अध्ययन में विभिन्न सांख्यिकीय आंकड़े और उनके बाद के विश्लेषण का उपयोग शामिल है। जनसांख्यिकीय अध्ययन प्रकृति, विकास, आयु-लिंग संरचना, स्थानिक वितरण, प्रजनन और जनसंख्या की मृत्यु दर के अलावा प्रवासन के आसपास केंद्रित है।

उपर्युक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि भौतिक या जैविक मानव विज्ञान का दायरा बहुत हद तक विकसित हुआ है और विषय के बढ़ते आयाम विभिन्न दृष्टिकोणों में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। समय के साथ शारीरिक मानव विज्ञान का ध्यान बदल रहा है। मानव आनुवांशिकी के अध्ययन की शुरूआत के परिणामस्वरूप जैविक मानव विज्ञान के रूप में भौतिक मानव विज्ञान को नामित किया गया। आज तक भौतिक या जैविक मानव विज्ञान के अनुप्रयोग दुनिया भर में मनुष्यों के विकास के लिए बहुत प्रभावी साबित हुए हैं।

अपनी प्रगति को जांचें 1

1) शारीरिक मानव विज्ञान क्या है?

....

....

....

2) चार्ल्स डार्विन की किस पुस्तक ने उन्नीसवीं शताब्दी में एक क्रांति शुरू की थी?

....

....

....

3) भौतिक मानव विज्ञान में अध्ययन के वर्तमान क्षेत्र क्या हैं?

....

....

....

2.2 सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान

सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान, मानव विज्ञान की दूसरी प्रमुख शाखा है जो मानव संस्कृति और समाज के तुलनात्मक अध्ययन पर केंद्रित है। सामाजिक व्यवहार का गहन अध्ययन, मानव व्यवहार में पारंपरिक पद्धति, विचार और भावनाओं और सामाजिक समूहों के

संगठन को सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के दायरे में शामिल किया गया है। सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान को ग्रेट ब्रिटेन में सामाजिक मानव विज्ञान और अमेरिका में सांस्कृतिक मानव विज्ञान के रूप में जाना जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी में इसी तरह के अध्ययनों के लिए मानव जाति विज्ञान शब्द का उपयोग किया गया था।

2.2.1 इतिहास और विकास

जब से मनुष्य पृथ्वी पर आया, तब से खुद को और दुनिया भर के अन्य लोगों के तरीकों के बारे में जानने के लिए उनकी रुचियां बढ़ रही हैं। ग्रीक सामाजिक विचारकों और पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व के दार्शनिकों द्वारा विधिवत तर्कसंगतता के साथ सामाजिक तथ्यों और विषयों पर चर्चा की गई। ग्रीक विद्वानों जैसे *हेरोडोटस*, डेमोक्रिटस (460 ईसा पूर्व - से 370 ईसा पूर्व), प्रोटगोरस (480 - से 410 ईसा पूर्व), सुकरात (470-से 399 ईसा पूर्व) और अरस्तु सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के प्रारंभिक चरणों के दौरान उल्लेखनीय है।

हेरोडोटस ने अपनी यूनानी संस्कृति को प्रचलित आदिम संस्कृति से बेहतर माना। फिर भी उन्होंने मानव जाति और रीति-रिवाजों का अध्ययन करने के महत्व का समर्थन किया जो आज मानव विज्ञान के अध्ययन में एक केंद्रीय विषय है। वह अपनी संस्कृति, द हिस्ट्रीज में विभिन्न संस्कृतियों और उनके संघर्षों के प्राचीन सम्मेलनों, प्रथाओं, प्राकृतिक आवास, राजनीतिक परिदृश्य इत्यादि का एक विस्तृत विवरण प्रदान करता है। सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के अध्ययन में उनके महत्वपूर्ण योगदान के कारण, उन्हें कई लोगों द्वारा ''मानव विज्ञान के जनक'' के रूप में पहचाना जाता है।

हेरोडोटस के बाद आए डेमोक्रिटस ने प्रकृति पर लिखा। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय पौधे और खनिजों की जांच और परीक्षण करने में लगाया ।

दार्शनिक प्रोटैगोरस अपने वाक्यांशः मनुष्य सभी चीजों का माप है, के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने समझाया कि कैसे सामाजिक लक्षण विकसित हुए। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रारंभिक समाज समरूप, एकीकृत और निर्विवाद था, और कुछ बुनियादी आविष्कार जैसे भाषा, परिवार, न्याय, नैतिकता इत्यादि मानव विकास के शुरुआती चरणों में किए गए थे। (विकिपीडिया के अनुसार, डेमोक्रिटस के लिए अधिक सत्य है)

एक अन्य प्रसिद्ध ग्रीक विद्वान सुकरात ने सामाजिक तथ्यों पर मानव विज्ञान की सोच की दिशा में योगदान दिया। उन्होंने कहा कि समाज को कुछ सार्वभौमिक मूल्यों द्वारा निर्देशित किया जाता है जो विभिन्न सामाजिक रीति-रिवाजों से आगे निकलते हैं।

अरस्तु सभी ग्रीक दार्शनिकों में सबसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 'मानववैज्ञानिक' शब्द का उपयोग किया। जो मानव के बारे में बात करते हैं। अरस्तु के अनुसार, मनुष्य (एंथर्डोप्स) अपनी प्रकृति से एक समाजिक राजनीतिक प्राणी (dion) है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, वह पहले ऐसे विद्वान थे जिन्होंने इस बात का समर्थन किया कि 'मनुष्य स्वभाव से सामाजिक है'। संस्कृति और समाज पर उनका अध्ययन और उनकी मानव विज्ञान संबंधी अर्न्तज्ञान कि संस्कृती सीखने से मिली है, जो वर्तमान समय में मानव विज्ञान के सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन के समान हैं।

लेकिन इस विषय का उचित व्यवस्थित अध्ययन तब शुरू हुआ जब, यूरोपीय लोगों ने उपनिवेशों का गठन किया और अपनी संस्कृतियों को शामिल किया। लोगों और उनकी

संस्कृति के बारे में जानकारी का एक अच्छा विवरण मिशनरी, यात्रियों और राजनयिकों से लिया गया था। डेविड ह्यूम और इमानुएल कांट ने खुलासा किया कि यात्रियों द्वारा प्रस्तुत किए गए अध्ययन अत्यधिक साम्राज्यवादी और धारणा में नस्लवादी थे। प्राचीन समय में उपनिवेशों में साधारण जीवन के अध्ययन ने यात्रियों को नस्लीय श्रेष्ठता का दावा करने के लिए प्रेरित किया ।

सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत ने दार्शनिकों, सामाजिक विचारकों और शिक्षाविदों के लेखन से प्रमाण के रूप में एक और विकसित सैद्धांतिक रूपरेखा प्रस्तुत की। थॉमस हॉब्स (1588-1679) ने लीविथान (1651) में समाज का अध्ययन किया और हरबर्ट चेरबेरी (1583-1648) ने धर्म का इतिहास लिखा, जो की तुलनात्मक धर्म पर प्रारंभिक कार्य था।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के अध्ययन ने नई ऊंचाई प्राप्त की क्योंकि विकासवादी सिद्धांत (चार्ल्स डार्विन की पुस्तक उत्पत्ति प्रजातियों द्वारा प्रेरित) ब्रिटेन, अमेरिका और जर्मनी में एक साथ विकसित हुआ। सर एडवर्ड बी टायलर (1832–19 17), पारम्परिक विकासवादी विद्यालय के अग्रणी में से एक थे, जिन्होंने सांस्कृतिक विकास या अनियंत्रित सांस्कृतिक विकास के अनूठे अनुक्रम का समर्थन किया। (बॉक्स 1 देखें) उन्होंने ऐतिहासिक संबंध जाने बिना दुनिया भर की संस्कृतियों में समानताओं पर जोर दिया, जो कि मानसिक एकता या मानव जाति की मानसिक एकता के कारण थे। (बॉक्स 2 देखें)

बॉक्स 1 : *एकरेखीय सांस्कृतिक विकास* : माना जाता है कि दुनिया की संस्कति या संस्कृतियों ने विभिन्न क्रमिक चरणों में निरंतर सफलता हासिल की। जिसके परिणामस्वरूप सरल रूप जटिल रूपों में बदलते हैं, एकरूपता विषमता में बदलती है और अनिश्चितता की स्थिति निश्चितता की ओर जाती है।

टायलर ने अपनी एक योजना को प्रस्तुत किया जिसमें धर्म के विकास की निम्नलिखित अवस्थाएं पाई जाती है:

1) जीवात्मवाद (आत्माओं की पूजा, सरल समाजों से जुड़ा हुआ)

2) बहुदेववाद (कई देवताओं की पूजा)।

3) एकेश्वरवाद (एक देवता की पूजा, उन्नत समाज से जुड़ा हुआ)।

हेनरी मेन, जेम्स फ्रैजर, एलएच मॉर्गन, बाचोफेन, डब्ल्यू.एच.आर. रिवर्स, कार्लोस सेलिगमन और एसी हैडॉन जैसे विचारकों ने मानव जाति के सांस्कृतिक इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए एक पद्धति के रूप में विकासवादी योजना के उपयोग का समर्थन किया। वे इस बात से भी आश्वस्त थे कि संस्कृति प्रगतिशील और विकास उन्मुख परिवर्तनों से गुजर चुकी है लेकिन हमेशा अनुक्रम में होती है। उन्होंने संस्कृति में समानताओं को मनुष्य की मानसिक एकता के संदर्भ में समझाया। मॉर्गन ने विचार के इस विद्यालय के आधार पर मनुष्यों के विकासवादी आदर्श को बेकार, बर्बरता और सभ्यता के चरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

बॉक्स 2

मानव जाति की मानसिक एकता (साइकिक युनिटी ऑफ मैनकाइंड) प्रतिक्रिया देने की मनुष्यों की समान मानसिकता है और समय की एक निश्चित अवधि पर इसी तरह के पर्यावरणीय स्थिति की तरह सोचता है।

विचार के विकासवादी स्कूल ने समकालीन विद्वानों से गंभीर आलोचनाओं का सामना किया, जिन्होंने विरोधी विकासवादी या प्रसारवादी होने का दावा किया। उन्होंने इस बात का समर्थन किया कि संस्कृति न केवल विकसित हुई बल्कि सांस्कृतिक प्रसार के माध्यम से विकृत भी हो गई। वे इस बात से भी आश्वस्त थे कि मनुष्य मूल रूप से अनौपचारिक था, और महत्वपूर्ण आविष्कार किसी विशेष स्थान पर किए गए थे, जहां से इसे विश्व के दूसरे हिस्सों में प्रसारित, प्रवासित और उधार दिया गया था। इस प्रकार, सांस्कृतिक प्रसार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक स्थान या समाज में संस्कृति लक्षण, खोज या आविष्कार किया जाता है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अन्य समाजों में फैलता है। समर्थकों की भौगोलिक और राष्ट्रीय पहचान के आधार पर प्रसार के विद्यालय को ब्रिटिश, जर्मन और अमेरिकन में बांटा गया है। इस स्कूल के मुख्य प्रतिपादक श्मिट, डब्ल्यू. जे. पेरी, रॉबर्ट लोवी, फ्रांज बोआस, क्लार्क विस्लर और ए.एल. क्रॉबर हैं।

फ्रांज बोआस सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के इतिहास में सबसे प्रभावशाली विचारकों में से एक थे। विचार के विकासवादी स्कूल के आलोचक के रूप में उन्होंने पूरी तरह से अनियंत्रित विकासवादी सिद्धांत को खारिज कर दिया और व्यापक क्षेत्र के काम के संचालन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने इसके प्रशंसकों और अव्यवहारिक विशेषज्ञों से मानव को विज्ञान मुक्त करने के लिए व्यापक क्षेत्रीय अध्ययन आयोजित किए। उन्होंने यह भी कहा कि सभी संस्कृतियां अलग-अलग थीं और इसलिए उन्हें अन्य संस्कृतियों की तुलना में उनके मूल्यों के आधार पर अध्ययन किया जाना चाहिए। इस अवधारणा को ऐतिहासिक विशिष्टता के रूप में जाना जाने लगा।

2.2.2 अध्ययन के वर्तमान क्षेत्र

मानव विज्ञान में क्षेत्रीय कार्य की परंपरा बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में अस्तित्व में आई। बीसवीं सदी की शुरुआत में विद्वानों ने अनियंत्रित विकासवादी सिद्धांत की भी निंदा की। (बोंसिलाव मेलिनोव्स्की) इसके मुख्य समर्थक थे। वह मूल भाषा में अध्ययन करने वाले पहले मानववैज्ञानिक थे। उन्होंने जोर देकर कहा कि एक शोधकर्ता को मूल भाषा के माध्यम से आँकड़ें एकत्रित करना चाहिए और गहन क्षेत्र कार्य करना चाहिए। उन्होंने संस्कृति के वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए एक पद्धति भी विकसित की जिसके द्वारा मौजूदा संस्कृतियों की तुलना, विश्लेषण और व्याख्या की जा सकती है। मालिनोव्स्की की इस पद्धति को कार्यात्मकता के रूप में जाना जाता था। मालिनोव्स्की का मानना था कि संस्कृति के हर पहलू में एक कार्य है और वे परस्पर निर्भर और पारस्परिक हैं। कार्यात्मकता के उनके सिद्धांत के अनुसार, संस्कृति के संस्थान पूरी तरह से व्यक्ति और समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए काम करते हैं।

एक अन्य ब्रिटिश मानव वैज्ञानिक ए. आर. रैडक्लिफ-ब्राउन जो मालिनोव्स्की के समकालीन थे, ने सामाजिक संरचना की अवधारणा विकसित की। रैडक्लिफ-ब्राउन के अनुसार,

सामाजिक संरचना एक संस्थागत ढांचे के भीतर सामाजिक संबंधों के माध्यम से संबंधित है। रैडक्लिफ-ब्राउन के लिए, सामाजिक संरचना एक 'अनुभवजन्य' इकाई है, जो सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के विषय वस्तु का गठन करती है। उन्होंने इस विचार पर जोर दिया कि सामाजिक संगठन कई भागों से बने होते हैं और प्रत्येक भाग पूरी तरह से तैयार करने के तरीके में कार्य करता है। रैडक्लिफ-ब्राउन का यह आदर्श संरचनात्मक कार्यात्मकता के रूप में जाना जाता है।

बाफिन द्वीपसमूह में बोआस द्वारा आयोजित, ट्रोब्रिंड द्वीपसमूह में मालिनोव्स्की और अंडमान में रैडक्लिफ द्वारा आयोजित मानव विज्ञान के क्षेत्र कार्य ने कई विद्वानों और बुद्धिजीवियों को प्रेरित किया। बोआस ने अपने छात्रों को बीसवीं शताब्दी (1930 के दशक) में सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के अध्ययन में एक सिद्धांत पर निर्माण करने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

इस समय रूथ बेनेडिक्ट, मार्गरेट मीड, लिटन, कोरा-डु-बोइस, ए कार्डिनर और अन्य ने विकास और प्रसार के सिद्धांतों की आलोचना की। उन्हें मनोविश्लेषण के आधार पर संस्कृति और व्यक्तित्व या इसके विपरीत बातचीत के बीच बातचीत का अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई। इस विचार के स्कूल को संस्कृति और व्यक्तित्व स्कूल के रूप में जाना जाता था। इस स्कूल को मनोवैज्ञानिक मानव विज्ञान स्कूल भी कहा जाता है। मनोवैज्ञानिक स्कूल के अग्रदूत गेस्टल्ट मनोविज्ञान से प्रेरित थे जो मनुष्यों के व्यवहार पद्धति की कुल धारणा से संबंधित है। सामाजिक मानव विज्ञान के उप-हिस्से के रूप में मनोवैज्ञानिक मानव विज्ञान आज अध्ययन का एक बेहद मान्यता प्राप्त क्षेत्र है।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में 30वें दशक के अंत में विचारों का एक और स्कूल उभरा जब वी. गॉर्डन चाइल्ड, लेस्ली व्हाइट और जूलियन स्टीवर्ड ने विकासवादी दृष्टिकोण के पुनरुत्थान की वकालत की। तीनों को नव-विकासवादी के रूप में जाना जाने लगा। जूलियन एच स्टीवर्ड (1902-1972) ने अपनी थ्योरी ऑफ कल्चर चेंज (1955) में संस्कृति पर पारिस्थितिक विज्ञान के शक्तिशाली प्रभाव के बारे में चर्चा की। लेस्ली ए व्हाइट (1900-1975) और पुरातत्वविद् वी. गॉर्डन चाइल्ड (1892-1957) ने समाज के व्यवहार पर उत्पादन के साधनों के प्रभाव के बारे में चर्चा की।

1950 के दशक में भाषाई, प्रतीकात्मक और संज्ञानात्मक मानव विज्ञान की शुरूआत ने सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के अध्ययन के क्षितिज को और बड़ा कर दिया। प्रसिद्ध फ्रांसीसी मानववैज्ञानिक क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस सामाजिक व्यवहार (संबंधों और अनुभवों) के अध्ययन के लिए संरचनात्मकता की अपनी पद्धति से निकटता से जुड़े हुए हैं। इस प्रकार लेवी-स्ट्रॉस की संरचनावाद सार्वभौमिक मानसिक प्रक्रियाओं के संदर्भ में सांस्कृतिक और सामाजिक पद्धति से सम्बन्धित हो गया जो मानव मस्तिष्क के जैव रसायन में निहित हैं। अमेरिका में विक्टर डब्ल्यू टर्नर, मैरी डगलस और क्लिफोर्ड गीर्टज न समाज की चमत्कारिक-धार्मिक चिंताओं के आधार पर प्रतीकात्मक मानव विज्ञान पर काम किया, जो संरचनात्मकता से कहीं अधिक लोकप्रिय हो गए।

सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के अध्ययन की शुरुआत से आज तक मानव समाज और संस्कृति के अध्ययन में कई सिद्धांत तैयार किए गए थे। बीसवीं शताब्दी के मध्य में महिलाओं, वर्ग और शक्ति संरचना, जाति, रोजगार, प्रवासन, शहरीकरण आदि पर अध्ययन ... *देरिदा* (1930-2004), मिशेल

फूको (1926-1984), जैक्स लेकन (1901-1981), सिमोन डी बउआर (1908-1986), जीन-पॉल सार्त्र (1905-1980) जैसे विचारकों के काम मार्क्सवाद, नारीवाद, आधुनिकतावाद, उपनिवेशवाद के, संरचनात्मकता के सिद्धांतों से प्रभावित थे। ।

समकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान में दुनिया के सभी हिस्सों में शोध उन्मुख अध्ययन शामिल हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान मानव विज्ञान के तरीकों और तुलनात्मक विश्लेषण का उपयोग करके दुनिया भर में मनुष्यों के सांस्कृतिक लक्षणों और सामाजिक गतिविधियों का अध्ययन सुनिश्चित करता है। लेकिन इस तरह के अध्ययन अनुशासन के समग्र अभिविन्यास को बनाए रखते हुए आयोजित किए जाते हैं। वैश्वीकरण, अंतर्राष्ट्रीयकरण, बहुसांस्कृतिकता, और प्रवासी अध्ययन सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान के अध्ययन में एक प्रमुख प्रवृत्ति बन रहे हैं। आजकल, सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान में निम्नलिखित अध्ययन भी शामिल हैः

- लिंग और अन्य उप-क्षेत्र जैसे यौनिकता में लेस्बियन, गे और ट्रांसजेंडर,
- मानवाधिकार,
- कॉर्पोरेट और सार्वजनिक क्षेत्र,
- स्वास्थ्य क्षेत्र ।

इसलिए सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान का अध्ययन हमें मानव समाज और संस्कृति को समझने में मदद करेगा ।

अपनी प्रगति को जांचें 2

1) सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान को परिभाषित करें।

....

....

....

....

2) मानव जाति की मानसिक एकता क्या है?

....

....

....

3) मानव विज्ञान में एकरेखीय सांस्कृतिक विकास की भूमिका क्या है?

....

....

....

....

2.3 पुरातात्विक मानव विज्ञान

पुरातात्विक मानव विज्ञान भौतिक अवशेषों और पर्यावरणीय आँकड़ों की पुनःप्राप्ति और विश्लेषण के माध्यम से मानव संस्कृतियों का अध्ययन करता है। पुरातत्त्वविदों द्वारा जांच किए जाने वाले भौतिक उत्पादों में उपकरण, मिट्टी के बर्तन, परिवारों और बाड़ों को शामिल किया [illegible]-साथ मानव, पौधे और पशु अवशेषों के निशान के रूप में बने रहते हैं, जिनमें से कुछ 2.5 मिलियन वर्ष पुराने हैं। (हैविलैंड एट अल 2008: 26) मनुष्य के अतीत के अवशेषों को पुनर्प्राप्त करने और अध्ययन करने के लिए पुरातत्व को विज्ञान के रूप में सबसे अच्छा विज्ञान माना जाता है, इसकी अपनी तकनीकें हैं, जिनमें से खुदाई एक है, जो बेहद विशिष्ट और महत्वपूर्ण है। (रोः 1971: 21)। नेल्सन पुरातत्व को ''मूल, पुरातनता, और मनुष्य और उसकी संस्कृति के विकास से संबंधित मूर्त अवशेषों के पूरे शरीर के अध्ययन के लिए समर्पित विज्ञान" के रूप में परिभाषित करते हैं (दासः 1996: 35)। यद्यपि पुरातात्विक एक अलग अध्ययन के रूप में मौजूद है, लेकिन मनुष्यों के अपने अध्ययन में यह मानव विज्ञान से जुड़ा हुआ है और इस प्रकार यह मानववादी विज्ञान बनाता है। पुरातात्विक काल में शामिल समय अवधि प्रागैतिहासिक, प्रोटो-ऐतिहासिक और सभ्यता जैसे बाद की अवधि भी होती है।

हाल के दिनों में नए पुरातत्व, प्रक्रियात्मक पुरातात्विक और बाद के प्रक्रियात्मक पुरातत्व जैसे अध्ययन ने शोधकर्ताओं को संस्कृतियों और इसकी प्रक्रियाओं के इतिहास को समझने में मदद की है। प्राचीन-मानव विज्ञान, जातीय-पुरातत्व और औपनिवेशिक पुरातत्व का अध्ययन सभी पुरातात्विक अध्ययन के ढांचे के भीतर शामिल है। प्रारंभ में पुरातात्विक मानव विज्ञान के अध्ययन में भौतिक और भौतिक संस्कृतियों का पता लगाने के लिए पूर्ण और सापेक्ष काल निर्धारण विधियों का उपयोग शामिल था। समय की जनसांख्यिकीय स्थिति और पर्यावरणीय क्रम समय के साथ, निर्वाह पद्धति, अर्थव्यवस्था इत्यादि सभी पुरातात्विक अध्ययन में शामिल थे।

2.3.1 इतिहास और विकास

प्रागैतिहासिक लिखित अभिलेखों से पहले मनुष्यों के अस्तित्व की बेहद लंबी अवधि है, और लेखन की अनुपस्थिति में, विभिन्न विशेष प्रकार के सबूत हैं, जिसके साथ प्रागैतिहासिक के छात्र को उसका अध्ययन करना है (रोः 1971: 21)। पॉल टोरुनल(1833) ने दक्षिणी फ्रांस की गुफाओं में निष्कर्ष निकालने के बाद ''पूर्व-इतिहास'' शब्द का प्रयोग किया था। हालांकि, 1851 में डैनियल विल्सन द्वारा सटीक शब्द ''प्रागैतिहासिक'' का उपयोग किया गया था। प्रागैतिहासिक चरणों का अध्ययन पत्थर, लकड़ी, हड्डी, धातुओं, मिट्टी के बरतन, उपकरण, गहने और संगठनों जैसे पदार्थों की मदद से पुरातत्त्वविदों द्वारा किया जाता है।

प्रागैतिहासिक, काल विभाजन के बिना अध्ययन करने के लिए बहुत विशाल और विविध है। मूल और पारंपरिक विभाजन बेहद सरल था। यह प्रागैतिहासिक को तीन हिस्सों में विभाजित करता है जो इस प्रकार हैं:

- पाषाण युग
- कांस्य युग
- लौह युग।

कुछ समय बाद कांस्य युग में तांबा भी शामिल हो गया, इस प्रकार इसे तांबा-कांस्य युग कहा जाता था। हालांकि, पाषाण युग इतना विशाल था की आगे इसे निम्न पुरापाषण कालीन, मध्य पुरापाषण कालीन और उच्च पुरापाषण कालीन में विभाजित किया गया। तीन पुरापाषण कालीन चरणों के बाद अन्य चरणों को मध्य पाषाण कालीन और नवपाषाण कालीन चरण या संस्कृति कहा जाता है।

कुछ पूर्व इतिहासकार निर्वाह अर्थव्यवस्था के आधार पर प्रागैतिहासिक काल के इस वर्गीकरण से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने निम्नलिखित चरणों का उपयोग किया:

- बर्बर या खाद्य एकत्रीकरण चरण,
- खाद्य उत्पादन चरण
- शहरीकरण चरण।

आद्यइतिहास का चरण प्रागैतिहास के बाद आता है, जो प्रागैतिहासिक और इतिहास के बीच की अवधि है। इस अवधि को लेखन के कुछ रूपों की उपस्थिति से चिह्नित किया जाता है। यह कहा जा सकता है कि भारत में मौर्य शासन के समय पूर्व-हड़प्पा का समय, आद्य इतिहास की श्रेणी के तहत आते थे, यानी 3500 से 300 ईसा पूर्व तक ।

सभ्यता को बड़े जटिल समाजों, तय अस्तित्व, जानवरों को पालतू बनाना, पौधों, विशेषज्ञ व्यवसायों, श्रम और व्यापार के विभाजन की उपस्थिति से चिह्नित किया जाता है। भारत में, सिंधु घाटी सभ्यता (2500 ई.पू.), इसके दो शहरों मोहनजोदाड़ो और हड़प्पा को, दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक माना जाता है। मिस्र, चीन और मेसोपोटामिया उस समय के ज्ञात अन्य महत्वपूर्ण सभ्यताएं हैं। यह सत्य है कि सिंधु घाटी की सभ्यता इतिहास से गायब हो गई है, जबकि अन्य जारी सभ्यताएं एक पुरातत्त्ववेत्ता के लिए प्रमुख चिंताओं में से एक है।

पुरातात्विक मानव विज्ञान ने अतीत में संस्कृतियों के मूल, वृद्धि और विकास को खोजने और समझाने की कोशिश की। हालांकि, पुरातात्विको द्वारा नियोजित मुख्य विधि खुदाई है, पर सर्वेक्षण और तथ्य विश्लेषण भी महत्वपूर्ण तरीकों का निर्माण करते हैं। पुरातत्व का मुख्य उद्देश्य एकत्रित सामग्री को पुर्नप्राप्त, अभिलिखित, विश्लेषण और वर्गीकृत करना है।

2.3.2 अध्ययन के वर्तमान क्षेत्र

पुरातत्व मानववादी अध्ययन के साथ-साथ एक विज्ञान के रूप में भी मौजूद है। एक मानवीय विषय के रूप में, यह संस्कृति, लोगों, विचारधारा, शक्ति और कुछ भी विकसित करने जैसी चीजों को समझने की कोशिश करता है जो समाजों के परिवर्तनों में प्रभावित हुए हैं। एक विज्ञान के रूप में यह उनके साथ जो भी साक्ष्य उपलब्ध है, उसके आधार पर घटनाओं का पुनर्निर्माण करने की कोशिश करता है। यह मनुष्यों के अतीत के पुनर्निर्माण के लिए सापेक्ष और पूर्ण कालनिर्धारण जैसे वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करता है।

पुरातात्विक मानव विज्ञान में निम्नलिखित विभिन्न क्षेत्र हैं:

- पुरापाषाणकालीन मानव विज्ञान
- पर्यावरण पुरातत्व

- जातीय-पुरातत्व
- नवीन पुरातत्व या प्रक्रियात्मक पुरातत्व (न्यू ऑर्कियोलॉजी)
- अधिवासी पुरातत्व
- उत्तर-प्रक्रियात्मक पुरातत्व

पुरापाषण कालीन-मानव विज्ञान पुरापाषण काल के लोगों का अध्ययन है। इस अध्ययन में, मानव वंश और विकास का पुनर्गठन जीवाश्मों और कंकाल अवशेषों के अध्ययन के आधार पर पुनर्निर्मित किया जाता है जो कब्र के मैदानों से खुदाई करते हैं। तुलनात्मक अध्ययन आरंभिक नर वानर विज्ञान के अध्ययन के माध्यम से किए जाते हैं। निश्चित निष्कर्ष निकालने के लिए मानव जाति विज्ञान के विवरण का भी उपयोग किया जाता है। इसलिए, पुनर्निर्माण के लिए उपयोग की जाने वाली विधियों को ऐतिहासिक, तुलनात्मक और जीवित माना जा सकता है।

पर्यावरण पुरातत्व संस्कृति पर और इसके विपरीत पर्यावरण के प्रभाव को समझने के प्रयास में पर्यावरणीय साक्ष्य का अध्ययन है। यह पूर्व के मानव समाजों के वातावरण का अध्ययन करने के लिए भूवैज्ञानिक और जैविक तरीकों से पौधों, जानवरों और पराग कोर आदि के जीवाश्म अवशेषों का अध्ययन करता है।

मानवजाति-पुरातत्व, पुरातत्व के अध्ययन में नृजातीय विज्ञान (ऐथनोग्रॉफी) का उपयोग है। यह अध्ययन जीवन के तरीकों, धार्मिक मान्यताओं और अतीत की सामाजिक संरचना को समझने में मदद करता है। यह अध्ययन का एक आधुनिक रूप है।

न्यू आर्कियोलॉजी या प्रक्रियात्मक पुरातत्व में उन प्रक्रियाओं का अध्ययन करना शामिल है, जिनके द्वारा मनुष्य रहते थे, यानि मनुष्यों ने अतीत में कैसे कलाकृतियों का निर्माण किया और वे अंततः वे कैसे क्षीण हो गए। पुरातत्त्वविद अध्ययन करते है कि कलाकृतियों का निर्माण कैसे किया जाता है और पुरातात्विक क्षेत्र ने प्राकृतिक या सांस्कृतिक कारणों को अध्ययन के समय के दौरान क्या किया है। इसे क्षेत्र निर्माण प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है। प्रक्रियात्मक पुरातात्विकों ने पिछले मानव समाज के अध्ययन में सांस्कृतिक ऐतिहासिक विधि का उपयोग किया। यह प्रवृत्ति 1960 से अमेरिका में विशेष रूप से सैली आर बिनफोर्ड और लेविस बिनफोर्ड की पुस्तक पर *न्यू पर्सपेक्टिव्स इन आर्किओलॉजी* (1968) के बाद हुई, जहां उन्होंने एकत्रित जानकारी के विश्लेषण के लिए कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के उपयोग का सुझाव दिया।

पुरातात्विक अधिवास परिदृश्य में बस्तियों के अध्ययन और मनुष्यों द्वारा किए गए कार्यों पर पर्यावरण के प्रभाव से संबंधित है, जिनके अन्तर्गत इस बात का भी अध्ययन किया जाता है कि वह कुछ सिद्धांतों के अनुसार खुद को कैसे बनाते हैं। यह शहरी और ग्रामीण रिक्त स्थान के बीच साझा संबंधों के साथ सम्बंधित है। इन सभी सम्बंधों का पिछले परिस्थितियों के आधार पर अध्ययन किया जाता है। सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने में पुरातात्विक और मानवजाति विज्ञान विशेषज्ञता के उपयोग के परिणामस्वरूप सांस्कृतिक मानव विज्ञान से संबंधित पारंपरिक मुद्दों को प्रमुख महत्व दिया गया था। पुरातात्विक अधिवास, इसलिए यह पुरातत्व के मुख्य क्षेत्रों में से एक है और इसे कभी-कभी गैर-स्थान पुरातत्व भी कहा जाता है क्योंकि यह केवल एक क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय बड़े क्षेत्रों की जांच करता

है। पुरातात्विक अध्ययन के इस रूप को पहली बार पेरू के वीरु घाटी में गॉर्डन आर विली द्वारा बड़े पैमाने पर किया गया था।

उत्तर-प्रक्रियात्मक पुरातत्व, जिसे व्याख्यात्मक पुरातत्व भी कहा जाता है, एक विवादास्पद प्रक्रिया है। इसे अक्सर एक आंदोलन के रूप में जाना जाता है जो पुरातात्विक सिद्धांत से आरंभ होता है। उत्तर-प्रक्रियात्मक पुरातत्व का सिद्धांत संवादात्मक पुरातत्व की प्रतिक्रिया और आलोचना के रूप में अस्तित्व में आया। उत्तर-प्रक्रियात्मक विचारक महत्वपूर्ण सिद्धान्तों विशेष रूप से नव-मार्क्सवाद, आधुनिकतावाद, नारीवादी पुरातत्व, संरचनावाद आदि समाज के सिद्धान्तों से प्रभावित होते हैं। 1970 के दशक के उत्तरार्ध और 1980 के दशक के आरंभ में प्रक्रियात्मक पुरातत्व ने इंग्लैंड में और इसके बाद अमेरिका में अपनी उपस्थिति बनाई। इंग्लैंड में उत्तर-प्रक्रियात्मक पुरातत्व के मुख्य प्रतिपादक इयान होडर हैं, जिन्होंने क्रिस्टोफर टिली, डैनियल मिलर और पीटर उको जैसे शब्दों का आविष्कार किया । उत्तर-प्रक्रियात्मक पुरातत्व किसी भी पुरातात्विक ज्ञान की व्याख्याओं के लिए खुलासा करता है जो प्रतिबिंबिता (सामग्री के सापेक्ष अपनी स्थिति के बारे में जागरूक होने) और बहुविकल्पों (पुरातात्विक सामग्री को समझने में पूरक होने के रूप में कई व्याख्याओं और दृष्टिकोणों को स्वीकार करते हुए) पर जोर देता है।

इस प्रकार पुरातात्विक मानव विज्ञान का अध्ययन कंकाल अवशेषों, पराग आदि के साथ भौतिक अवशेषों की सहायता से इतिहास के पुनर्निर्माण के माध्यम से आयोजित किया जाता है। पुरातात्विक मानव विज्ञान जैसे विभिन्न पुरातात्विक या प्रक्रियात्मक पुरातत्व, पुरातात्विक-अधिवास, जातीय-पुरातत्व, पुरापाषण-मानव विज्ञान, पर्यावरण पुरातत्व, और बाद में प्रक्रियात्मक पुरातात्विक पुनर्निर्माण के विभिन्न तरीकों का उपयोग करने के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आया।

अपनी प्रगति को जांचें 3

1) सभ्यता की अवधारणा क्या है?

....

....

....

....

2) पुरातात्विक मानव विज्ञान के मुख्य उद्देश्य क्या हैं?

....

....

....

3) पुरातत्व के अध्ययन में मानवविज्ञान का क्या उपयोग है?

....

....

....

2.4 भाषाई मानव विज्ञान

भाषाई मानव विज्ञान मानव के भाषाओं के अध्ययन से संबंधित है। एक भाषाविद् मानवविज्ञानी भाषा और संस्कृति व्यवहार के बीच संबंधों से सरोकार रखता है। भाषा मानव व्यवहार का एक महत्वपूर्ण पहलू है और संस्कृति के संचरण केवल भाषा के माध्यम से संभव है। इस तथ्य के कारण भाषा को अक्सर संस्कृति के वाहन के रूप में जाना जाता है। भाषा मनुष्य को अतीत की परंपराओं को संरक्षित करने और भविष्य के प्रावधान करने में सक्षम बनाती है। भाषाई मानव विज्ञान समय के साथ भाषाओं के उद्भव और विचलन का अध्ययन करता है। प्रारंभ में यह शाखा गायब होने वाली भाषाओं के मूल, विकास और बचाव के अध्ययन से संबंधित थी। समय के साथ भाषा के विभिन्न पहलुओं और सामाजिक जीवन पर इसके प्रभाव को भी ध्यान में रखा गया। आज भाषाई मानव विज्ञान एक अंतःविषय विज्ञान के रूप में मानव विज्ञान भाषाविज्ञान, जातिय-भाषा और सामाजिक भाषा विज्ञान के सहयोग से काम करता है।

2.4.1 इतिहास और विकास

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान और बीसवीं शताब्दी के शुरुआती दशकों के दौरान फ्रांज बोआस (1858-1942) ने मानव विज्ञान क्षेत्र आधारित किया और संस्कृति के मानव विज्ञान अध्ययन में भाषाई पहलुओं का अध्ययन करने की आवश्यकता पर बल दिया। वह विशेष रूप से मूल अमेरिकी भारतीय भाषाओं के अध्ययन में रूचि रखते थे और अपने छात्रों को समय के साथ भाषा के उभरने और विचलन का विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। अंततः भाषाई मानव विज्ञान को मानव विज्ञान अध्ययन के एक अभिन्न अंग के रूप में पहचाना जाने लगा। बोआस ने आगे के शोध के लिए इसे संरक्षित और बनाए रखने के प्रयास में लगभग विलुप्त जनजातियों की भाषा को दस्तावेजित करना शुरू कर दिया। बोस के इस मॉडल को तब 'सॉल्विजिंग मानव विज्ञान' कहा जाता था और अब इसे आमतौर पर 'मानव विज्ञान भाषाविज्ञान' के रूप में जाना जाता है।

'मानव विज्ञान भाषा' शब्द को फ्रांज बोआस के छात्र एडवर्ड सपीर (1884–1939) ने इजाद किया। उन्होंने भाषा को स्वैच्छिक रूप से प्रस्तुत प्रतीकों की एक प्रणाली के माध्यम से विचारों, भावनाओं और इच्छाओं को संचारित करने के लिए पूरी तरह मानव और गैर-सहज तरीके से परिभाषित की। सपीर से प्रेरित हुए उनके छात्रों ने पूरी तरह से मानव विज्ञान और भाषा के अध्ययन के लिए खुद को समर्पित किया और खुद को मानवविज्ञान भाषाविद के रूप में संदर्भित किया। इस समय लेस्ली ए व्हाइट ने अपनी पुस्तक द साइंस ऑफ कल्चर (1949) में उल्लेख किया था कि सभी व्यवहार उत्पन्न हुए थे और प्रतीकों का उपयोग करने के लिए मनुष्य की क्षमता पर आधारित थे। वास्तव में प्रतीकों का उपयोग संवादात्मक भाषण के लिए मार्ग प्रशस्त किया। उन्नीसवीं शताब्दी भाषाविदों ने भाषाओं की व्याख्या करने और उन्हें समानता और असमानताओं के आधार पर परिवारों और उप-परिवारों में वर्गीकृत करने में लगे हुए थे।

सपीर भाषा के आधार पर संस्कृतियों के तुलनात्मक अध्ययन में रुचि रखते थे। सपीर और उनके छात्र बेंजामिन ली व्हार्फ (1897-1941) ने भाषाई सापेक्षता पर एक परिकल्पना विकसित की जिसे लोकप्रिय रूप से सैपीर-व्हार्फ परिकल्पना के रूप में जाना जाता है। यह बताता है कि भाषा विचारओं को प्रभावित करता है और बदले में सांस्कृतिक व्यवहार को भी प्रभावित करता है। यह परिकल्पना बोआस की सांस्कृतिक सापेक्षता की अवधारणा का एक विस्तार है।

सरल शब्दों में उनका मानना था कि विभिन्न भाषा बोलने वाले समूहों के बीच मानव व्यवहार अलग-अलग होगा। इसलिए समाज पर विभिन्न भाषाओं के प्रभाव और प्रभाव को समझने के लिए एक भाषा कभी भी आधार नहीं बन सकती। 1950 के दशक में व्हायर ने वक्ता की संवेदनशीलता को समझने के लिए व्याकरण के उपयोग के आधार पर अपना स्वयं का पद्धतिपरक और वैचारिक ढांचा विकसित किया (जिसे मेटाप्रैमैटिक्स कहा जाता है)। 1960 और 70 के दशक में गंभीर आलोचनाओं के बावजूद, भाषाई मानव विज्ञान के अध्ययन में उनकी भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता है। 1980 के दशक में विशेष रूप से भाषा विचारधारा के समकालीन अध्ययन में विद्वानों द्वारा सैपीर और व्हार्फ की अवधारणाओं का उपयोग किया गया था।

जर्मन विद्वानों, जोहान गॉटफ्राइड वॉन हेडर (1744-1803) और विल्हेम वॉन हंबोल्ट (1767-1835) के कार्यों से प्रेरित होने के बाद साहित्यिक सापेक्षता और सपीर-व्हार्फ परिकल्पना के माध्यम से सपीर और व्हार्फ की अवधारणा को आगे बढ़ाया गया था। इंग्लैंड में मानववैज्ञानिक ने क्षेत्रीय कार्य के दौरान स्थानीय भाषा के उपयोग पर जोर दिया। मालिनोव्स्की (1884-1942) ने इसके लिए सैद्धांतिक और पद्धतिपूर्ण ढांचा प्रदान करके एक मानदण्ड स्थापित किया। वह मूल भाषा में अध्ययन करने वाले पहले मानववैज्ञानिक थे। मेलेनेशिया के ट्रोब्रिंड द्वीपनिवासी के बीच अपने क्षेत्र के काम के दौरान वह मूल भाषा में बातचीत करने में सक्षम थे। मालिनोव्स्की ने कुल मिलाकर जीवन के तरीकों की व्याख्या करने के लिए लोगों की भाषा सीखने की आवश्यकता पर बल दिया। मालिनोव्स्की ने मूल भाषा के माध्यम से मूल मानसिकता को दस्तावेजित करने पर जोर दिया।

1950 के दशक में, जातीय-भाषाविज्ञान (एथनो लिंग्विस्टिक) के अध्ययन ने मानव विज्ञान संबंधी मुद्दों के संबंध में भाषा विज्ञान का अध्ययन किया गया। संयुक्त राज्य अमेरिका में भाषाई मानव विज्ञान तेजी से विकास कर रहा था। व्हार्फ के अध्ययनों ने सैद्धांतिक समझ के लिए भाषा के उपयोग का मार्ग प्रशस्त किया और 1960 तक भाषाओं के अध्ययन को भाषाई मानव विज्ञान के रूप में जाना जाने लगा। इस अवस्था में भाषा की कलात्मकता और संस्कृति पर इसके प्रभाव पर अधिक जोर दिया गया था।

एक समाजशास्त्री और मानववैज्ञानिक, डेल हाइम्स (1927-2009), को इस नाम को प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति के रूप में माना जा सकता है। उन्होंने भाषाविद् जॉन गम्परज (1922) के साथ-साथ यह भी कहा कि भाषा को सांस्कृतिक गतिविधि के रूप में माना जा सकता है और इसे केवल मानवजाति विज्ञान विधियों के माध्यम से जांचा जा सकता है। यद्यपि मानव विज्ञान भाषा विज्ञान के पूर्व मॉडल 'बोलने के सांस्कृतिक संगठन' जैसे मुद्दों पर पहुंचे, लेकिन भाषा विकास की अवधारणा को नजरअंदाज कर दिया। 1980 के दशक के अंत में हाइग्स और गम्परज के छात्रों ने भाषण, भाषा विविधता, और सामाजिक बातचीत में भाषा के उपयोग के सामाजिक जीवन पर अध्ययन किया।

वर्तमान में मानव वैज्ञानिक और भाषाविद दोनों की विषय में भिन्नता हैं लेकिन दोनों भाषाएं पढ़ते हैं। भाषाई मानव विज्ञान जो भाषा और सांस्कृतिक व्यवहार के बीच संबंधों से संबंधित है, को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

- ऐतिहासिक भाषाविज्ञान भाषा के उभरने और विचलन से संबंधित है।
- संरचनात्मक भाषाविज्ञान या सामाजिक-भाषा विज्ञान सामाजिक व्यवहार के संदर्भ में भाषा की भूमिका से संबंधित है। संरचनात्मक भाषा विज्ञान उन नियमों को भी खोजता है जो बताते हैं कि वास्तविक भाषण में ध्वनि और शब्द कैसे शामिल किए जाते हैं।

भाषण का तरीका समाज दर समाज कार्य, व्यवहार और संचार के आधार पर भिन्न होता है। संज्ञानात्मक मानव विज्ञान भाषाई मानव विज्ञान का परिणाम है, जो उन सिद्धांतों को नियोजित करता है जिन पर किसी विशेष भाषा के वक्ताएं वर्गीकृत होते हैं और तथ्य की संकल्पना करते हैं। मानव विज्ञान ने एक तरफ जहाँ भाषा विज्ञान से सीखा है वहीं दूसरी तरफ इसमें योगदान भी दिया है।

2.4.2 अध्ययन के वर्तमान क्षेत्र

भाषा के अध्ययन में क्षेत्रीय कार्य अभी भी एक अभिन्न अंग बना हुआ है। भाषाई जांच में मानव विज्ञान पद्धतियों और तकनीकों का उपयोग एक शोधकर्ता भाषा और सांस्कृतिक व्यवहार के बीच संबंधों को समझने में सक्षम बनाता है। 1980 के दशक के बाद से भाषाई मानव विज्ञान के अध्ययन में भाषा समाजीकरण एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है। इसे समाजीकरण शब्द से अनुकूलित किया गया है, जो मानव विज्ञान में एक व्यक्ति को सामाजिक जीवन और इसके विभिन्न पहलुओं की मूल बातें सुनने और पढ़ाने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। एलिनॉर ओच्स और बांबी सिचीफेलिन, जो भाषाविद और मानववैज्ञानिक दोनों हैं, इस अवधारणा के अग्रदूत हैं। उन्होंने भाषा समाजीकरण को भाषा के माध्यम से और भाषा में समाजीकरण की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया।

1980 के दशक में, भाषा विचारधाराओं की अवधारणा वैलेंटाइन वोलोशिनोव (1895-1936), मिखाइल बखतिन (1895-1975) और रोमन जैकबसन (1896-1982) जैसे विद्वानों के पुराने कार्यों के साथ कई भाषाई बुद्धिजीवियों द्वारा नए विचारों के साथ पुनःचर्चा की गई। उनमें से, माइकल सिल्वरस्टीन (1945-जन्म) जो रोमन जैकबसन के एक छात्र थे, ने भाषा विचारधारा पर विस्तार करने की कोशिश की जिसे अब भाषाई मानव विज्ञान में एक महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जाता है।

भाषा विचारधारा उन विचारों का तात्पर्य है जो भाषा से संबंधित हैं और समाज के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक नैतिकता के साथ इसके संबंध हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि एक संकेत प्रणाली के रूप में भाषा अपने उपयोग को सामाजिक हकीकत में बदलने की अनुमति देती है। इन वर्षों के दौरान, भाषाई मानववैज्ञानिक भी अपनी पूरी शक्ति से भाषाओं का अध्ययन करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं यानि कार्यों और व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए भाषा का उपयोग कैसे किया जा सकता है। 1978 में तैयार विनम्रता के सिद्धांत में, पेनेलोप ब्राउन (1944-जन्म) और स्टीफन लेविनसन (1952-जन्म) दोनों सामाजिक भाषाविदों ने जोर देकर कहा कि विनम्र भाषण का उपयोग 'चेहरे की धमकी देने वाली कृत्यों' को कम करने के लिए किया जा सकता है। इस सिद्धांत का कई विद्वानों द्वारा आगे विश्लेषण किया गया है। मॉरीस ब्लोच (1939-जन्म) का कार्य दर्शाता है कि कैसे (एक वक्ता) सत्ता में शब्दों के उपयोग के माध्यम से प्राधिकरण और नेतृत्व को बनाए रखने में सक्षम है।

भाषाई मानव विज्ञान ने अपनी स्थापना के दिनों के बाद एक लंबा सफर तय किया है। हमें सिद्धांतों को समझने के लिए भाषाई मानव विज्ञान के अध्ययन के महत्व का एहसास हुआ है, जिसके आधार पर किसी विशेष भाषा के वक्ता, मानव समाजों में व्यवहार करेंगे और भाषाओं का विस्तार व उद्भव होगा ।

2.5 सारांश

मानव विज्ञान की चार शाखाओं के बीच पारस्परिक संबंध और अंतःस्थापिता मानव विज्ञान के अनुशासन के समग्र अभिविन्यास को सुनिश्चित करती है। मानव विज्ञान की चार शाखाओं के अध्ययन की विषयवस्तु कुल मिलाकर मनुष्य के अध्ययन के बहुआयामी पहलुओं को दर्शाती है। निम्नलिखित चार शाखाएं मानव जीवविज्ञान, संस्कृति और भाषा से सम्बद्ध हैंः

- शारीरिक या जैविक मानव विज्ञान,
- सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान,
- पुरातात्विक मानव विज्ञान और
- भाषाई मानव विज्ञान।

शारीरिक या जैविक मानव विज्ञान मानव शरीर, आनुवांशिकी और जीवित प्राणियों के बीच मनुष्य की स्थिति का अध्ययन करता है। यह मनुष्य की भौतिक विशेषताओं का अध्ययन करता है। यह जीवविज्ञान के सामान्य सिद्धांतों का उपयोग करता है और शरीर रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान, भ्रूण विज्ञान, प्राणीशास्त्र, जीवाश्मिकी और अन्य के निष्कर्षों का भी उपयोग करता है।

सामाजिक-सांस्कृतिक मानवविज्ञान में सामाजिक व्यवहार, मानवीय व्यवहार, विचार और भावनाओं और सामाजिक समूहों के संगठन में पारंपरिक तरीके का गहन अध्ययन शामिल है।

पुरातात्विक मानव विज्ञान में मानव जीवन के भौतिक और सामाजिक दोनों पहलुओं को शामिल किया गया है लेकिन यह पुराना है। यह कंकाल अवशेषों, पराग आदि के साथ भौतिक अवशेषों की सहायता से इतिहास के पुनर्निर्माण से संबंधित है। पुरातात्विक मानव विज्ञान विभिन्न पुरातात्विक या प्रक्रियात्मक पुरातत्व जैसे पुरातात्विक अधिवास, जातीय-पुरातत्व, पुरापाषणकालीन–मानव विज्ञान, पर्यावरण पुरातत्व, उत्तर-प्रक्रियात्मक पुरातत्व, आदि पुनर्निर्माण के विभिन्न तरीकों का उपयोग करने के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आया।

भाषाई मानव विज्ञान मानव की भाषाओं के अध्ययन से संबंधित है। मानववैज्ञानिक विशेष रूप से भाषा और संस्कृति के व्यवहार के बीच संबंधों के अध्ययन से जुड़े हुए हैं। भाषा, मानव व्यवहार का एक महत्वपूर्ण पहलू है और संस्कृति के संचरण केवल भाषा द्वारा ही संभव है।

संक्षेप में, मानव विज्ञान की प्रत्येक शाखा के सैद्धांतिक और वैचारिक ढांचे एक अलग पहचान बनाए रखने के समय और स्थान के साथ समग्रता में मनुष्य का अध्ययन करता है और यही मानव विज्ञान के अध्ययन की विशिष्टता को बरकरार रखता है।

2.6 संदर्भ

दास जी, 1996. *एंथ्रोपोलॉजी* (*फिजिकल, सोशल एण्ड कल्चरल*). दिल्ली. मनु रस्तोगी द्वारा प्रकाशित.

हैविलैंड, विलियम, हैरोल्ड ई एल, प्रिंस और दाना वालराथ 2008. *इंट्रोडक्शन टु एंथ्रोपोलॉजी.* कैलिफोर्नियाः सेन्गेज लर्निंग (वैड्सवर्थ).

झा, माखन.1983. *एन इंट्रोडक्शन टु एंथ्रोपोलॉजीकल थॉट.* नई दिल्लीः विकास प्रकाशन हाउस.

रो, डेरेक. 1971. *प्रिहिस्ट्री.* लंदनः ग्रेनाडा पब्लिशिंग लिमिटेड.

रॉय बसु, इंद्रानी. 2012. *एंथ्रोपोलॉजीः द स्टडी ऑफ मैन.* नई दिल्लीः एस चांद एंड कंपनी लिमिटेड.

सरकार, आर. एम 1997. *फंडामेंटल्स ऑफ फिजिकल एंथ्रोपोलॉजी.* कलकत्ता, विदयोदया पुस्तकालय प्राइवेट लिमिटेड की तरफ से श्रीमती रीना चट्टोपाध्याय द्वारा प्रकाशित.

शुक्ला, बी. आर के और सुधा रस्तोगी 1990. *फिजिकल एंथ्रोपोलॉजी एण्ड ह्युमन जेनेटिक्स : एन इंट्रोडक्शन.* नई दिल्लीः पलका प्रकाशन.

उपाध्याय, वी एस, और गया पांडे 1993. *हिस्ट्री ऑफ एंथ्रोपोलॉजीकल थॉट.* नई दिल्लीः कांसेप्ट पब्लिकेशन कंपनी.

2.7 आपकी प्रगति की जांच के लिए उत्तर

अपनी प्रगति को जांचें 1

1) शारीरिक मानव विज्ञान, मानव विज्ञान की वह शाखा यह है जो कि मानव शरीर, आनुवांशिकी और जीवित प्राणियों के बीच मनुष्य की स्थिति का अध्ययन करती है।

2) चार्ल्स डार्विन की पुस्तक आरेजिन ऑफ स्पीशीज के प्रकाशन ने 19वीं सदी के लोगों की सोच में क्रांति लाई।

3) भौतिक मानव विज्ञान के वर्तमान अध्ययन क्षेत्र में मानव पारिस्थितिकी, फोरेंसिक मानव विज्ञान, जनसांख्यिकी, मानव वृद्धि और विकास, मानव भिन्नता, आण्विक मानवविज्ञान, जनसंख्या, मानव आनुवंशिकता पुरापाषण नर वानर मानव विज्ञान, अस्थिविज्ञान और पुरापाषण—मानव विज्ञान हैं।

अपनी प्रगति को जांचें 2

4) सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान मानव विज्ञान की दूसरी प्रमुख शाखा है। यह एक अध्ययन है जो मानव संस्कृति और समाज के तुलनात्मक अध्ययन पर केंद्रित है। सामाजिक व्यवहार, मानव व्यवहार में पारंपरिक पद्धति, विचार और भावनाएं तथा सामाजिक समूहों के संगठन का गहन अध्ययन, सभी सामाजिक सांस्कृतिक मानव विज्ञान के दायरे में शामिल हैं।

5) मानव जाति की मानसिक एकता (साइकिक युनिटी ऑफ मैनकाइंड) मनुष्यों की समान मानसिकता को प्रतिबिंबित करती है। यह एक ही पर्यावरणीय स्थिति व समय में एक तरह से मानव के सोचने की प्रवृत्ति का प्रतिबिंबन है।

6) मानव जाति के सांस्कृतिक इतिहास का पुनर्निर्माण मानव विज्ञान के विकासवादी योजना का परिणाम है। जिसमें मुख्य रूप में यह भी आश्वस्त किया गया कि संस्कृति प्रगतिशील और विकास उन्मुख परिवर्तनों से गुजर चुकी है लेकिन यह हमेशा अनुक्रम में होती है। विकासवादियों ने मनुष्य की मानसिक एकता के संदर्भ में संस्कृति की

समानताओं को समझाया। मॉर्गन के स्कूल ऑफ थॉट ने मनुष्यों के विकासवादी मॉडल को अरण्य, बर्बर और सभ्यता के चरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

अपनी प्रगति को जांचें 3

7) सभ्यता की अवधारणा को हम बड़े जटिल समाजों के अस्तित्व में रहने, जानवरों को पालतू बनाने, पौधों, विशेषज्ञ व्यवसायों, श्रम और व्यापार के विभाजन की उपस्थिति से चिह्नित किया जाता है।

8) पुरातात्विक मानव विज्ञान ने अतीत में संस्कृतियों के उद्‌भव, वृधि और विकास को खोजने और समझाने की कोशिश की। हालांकि, पुरातत्व द्वारा नियोजित मुख्य विधि खुदाई है, सर्वेक्षण और तथ्य विश्लेषण भी महत्वपूर्ण तरीकों का निर्माण करता है। पुरातत्व का मुख्य उद्देश्य एकत्रित सामग्री को पुनर्प्राप्त, अभिलिखित, विश्लेषण और वर्गीकृत करना है।

9) पुरातत्व के अध्ययन में मानवविज्ञान का उपयोग जातीय-पुरातत्व कहा जाता है। यह अध्ययन जीवन के तरीकों, धार्मिक मान्यताओं और अतीत की सामाजिक संरचना को समझने में मदद करता है। यह अध्ययन का एक हालिया रूप है और जटिलताओं से मुक्त नहीं है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 संबद्ध क्षेत्रों के साथ मानव विज्ञान का संबंध*

इकाई की रूपरेखा

3.0 परिचय

3.1 अन्य अध्ययन विषयों के साथ भौतिक/जैविक मानव विज्ञान का संबंध

3.1.1 स्वास्थ्य विज्ञान के साथ संबंध

3.1.2 आनुवंशिकी के साथ संबंध

3.1.3 रासायनिक विज्ञान के साथ संबंध

3.1.4 पोषण के साथ संबंध

3.2 अन्य अध्ययन विषयों के साथ सामाजिक/सांस्कृतिक मानव विज्ञान का संबंध

3.2.1 समाजशास्त्र के साथ संबंध

3.2.2 मनोविज्ञान के साथ संबंध

3.2.3 इतिहास के साथ संबंध

3.2.4 भाषाई संबंध

3.3 अन्य अध्ययन विषयों के साथ पुरातत्व मानव विज्ञान का संबंध

3.3.1 इतिहास के साथ संबंध

3.3.2 पुरातत्व के साथ संबंध

3.3.3 भू-विज्ञान के साथ संबंध

3.3.4 भौतिक/प्राकृतिक और जैविक विज्ञान के साथ संबंध

3.4 सारांश

3.5 संदर्भ

3.6 आपकी प्रगति की जांच के लिए उत्तर

सीखने के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने बाद, शिक्षार्थियों से निम्नलिखित बातें सीखने की अपेक्षा की जाती है :

- अन्य संबंधित व्यवहार या सामाजिक विज्ञान के साथ मानव विज्ञान की तुलना और अंतर करना;
- अन्य विज्ञानों के साथ मानव विज्ञान के संबंध को समझना;
- समझें कि विभिन्न विषय मानव विज्ञान के अध्ययन में कैसे योगदान करते हैं; और
- यह जानना कि मानव विज्ञानी अन्य विज्ञानों के साथ कैसे सहयोग कर सकते हैं।

---

* डॉ. केया पाण्डे, सहायक प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय
प्रो. रंजना रे, पूर्व प्रोफेसर, मानव विज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

3.0 परिचय

जैसा कि इस खंड की पिछली इकाइयों में उल्लेख किया गया है, मानव विज्ञान और अन्य संबद्ध क्षेत्रों के बीच मुख्य अंतर यह है कि मानव विज्ञान जैविक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई, ऐतिहासिक और समकालीन दृष्टिकोण के अपने अद्वितीय मिश्रण के कारण मानव जाति का एक समग्र अध्ययन है। विरोधाभासी रूप से, मानव विज्ञान अन्य विषयों से अलग होते हुए भी, अपनी व्यापकता के कारण अन्य कई संबद्ध विषयों से जुड़ा हुआ है। यह कहा जाता है कि मानव विज्ञान विज्ञान में सबसे अधिक मानवतावादी है और मानविकी के बीच सबसे अधिक वैज्ञानिक है। एक अध्ययन के विषय के रूप में जो वैज्ञानिक और मानवतावादी दोनों है, मानव विज्ञान का कई अन्य शैक्षणिक क्षेत्रों के साथ संबंध है।

मानव विज्ञान एकमात्र ऐसा विषय नहीं है जो मानव जाति का अध्ययन करता है। प्रत्येक संबद्ध अध्ययन एक विशेष क्षेत्र पर केंद्रित है और अपने आप को मानव समाज और उसके जीवन के तरीके को एक या दूसरे तरीके से सोचने और अध्ययन करने के लिए प्रशिक्षित करता है। मालिनोवस्की का कहना है कि संस्कृति मानव की जैव-मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करने का एक साधन है। मानव विज्ञान, विज्ञान और मानविकी दोनों पर आधारित है। मालिनोवस्की के अनुसार, मानव विज्ञान प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान के बीच खड़ा है। मानव जाति का जैव-सामाजिक स्वरूप मानव विज्ञान का एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ मानव समाज का अध्ययन करने वाले अन्य विषयों के साथ मानव विज्ञान बहुत व्यापक हो जाता है। मानव विज्ञान इस प्रकार कई विषयों से अलग हटकर, हमेशा अध्ययन की प्रकृति का समर्थन करने और मान्य करने के लिए अन्य विषयों की सहायता लेता है। इस प्रकार, मानव विज्ञान अन्य विषयों के साथ अध्ययन के कुछ हितों और विषय को साझा करता है।

3.1 अन्य अध्ययन विषयों के साथ भौतिक/जैविक मानव विज्ञान का संबंध

हर्सकोविट्स के अनुसार, 'मनुष्य और उसके कार्य' शब्द में, 'मनुष्य ' शब्द का अर्थ मानव को एक 'जैविक जीव' के रूप में और 'कार्य' को 'संस्कृति' के रूप में बताया गया है। मानव विज्ञान मानव जीव विज्ञान और सांस्कृतिक विविधता का अध्ययन करता है, दोनों कारक समान रूप से महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं क्योंकि मानव विज्ञान मानव उत्पत्ति, विकास और भिन्नता जैसे जैविक पहलुओं और साथ ही समाज और संस्कृति जैसे सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं की खोज करता है।

3.1.1 स्वास्थ्य विज्ञान के साथ संबंध

जैविक मानव विज्ञान, जिसे भौतिक मानव विज्ञान के रूप में भी जाना जाता है, का संबंध मानव जैविक परिवर्तनशीलता के अध्ययन और समझ से है, जिसमें रूपात्मक भिन्नता भी शामिल है। मानवमिति इन अध्ययनों में एक प्रमुख उपकरण है। मानवमिति, शाब्दिक रूप से 'मानव जाति का माप' को, 1939 में एलेस हर्डलिका द्वारा 'वैज्ञानिक उद्देश्यों के लिए सबसे विश्वसनीय साधन और तरीकों द्वारा मनुष्य के लिए उसके कंकाल, उसके मस्तिष्क या अन्य अंगों को मापने और ग्रहण करने की सबसे व्यवस्थित कला' के रूप में परिभाषित की गई थी। मानव शरीर के आकार, अनुपात और संरचना का आकलन करने के लिए मानवमिति सार्वभौमिक रूप से लागू, सबसे सस्ती और गैर-आक्रामक उपलब्ध विधि है।

इसके अलावा यह, सभी उम्र में बच्चों और शरीर के आयामों में वृद्धि व्यक्तियों और आबादी के समग्र स्वास्थ्य और कल्याण को दर्शाती है, मानवमिति का उपयोग प्रदर्शन, स्वास्थ्य और अस्तित्व की भविष्यवाणी करने के लिए भी किया जा सकता है। ये अनुप्रयोग सार्वजनिक स्वास्थ्य और नैदानिक निर्णयों के लिए महत्वपूर्ण हैं जो व्यक्तियों और जनसंख्या के स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण को प्रभावित करते हैं। मानवमितिय माप मोटापा, अधिक वजन, शरीर में वसा वितरण और स्वास्थ्य परिणामों से जुड़े महामारी विज्ञान और शारिरिक रोगजनन शोध का विषय रहे हैं। संक्षेप में, मानवमिति का उपयोग करके स्वास्थ्य जोखिमों का आकलन वैज्ञानिक साहित्य में एक अच्छी तरह से स्थापित और समय-सम्मानित अवधारणा है।

हाल के वर्षों में, मानवमितिय संकेतक जैसे शरीर द्रव्यमान सूचकांक (बीएमआई) और कमर परिधि (डब्ल्यूसी) को बार-बार सरल और सामान्य वयस्क दीर्घकालिक स्थितियों जैसे कि टाइप 2 मधुमेह मेलेटस (T2DM) और हृदय रोग (CVD) को अभी तक के शक्तिशाली भविष्य संकेतक के रूप में दिखाया गया है।

स्वास्थ्य और प्राथमिक देखभाल को बढ़ावा देने के लिए मानव विज्ञान सूचकांकों के महत्व को तीन स्तरों पर संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता हैः

- व्यक्तिगत स्तरः व्यक्तिगत स्तर पर, माप को स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं के नैदानिक अनुप्रयोगों में उपयोग और समय पर स्वयं की निगरानी में रोगियों के उपयोग के लिए दोनों को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- सामुदायिक स्तरः सामुदायिक स्तर पर, साधारण मानवमिति माप से उप-आबादी की पहचान करने में सहायता मिल सकती है, जिसमें पुरानी बीमारी का जोखिम केंद्रित होता है, जिससे इन व्यक्तियों को स्वास्थ्य जोखिम कम करने के लिए लक्षित हस्तक्षेपों से लाभ मिलता है।
- जनसंख्या स्तरः जनसंख्या स्तर पर, शरीर की माप में लगातार परिवर्तनों को सामाजिक और पर्यावरणीय परिवर्तनों से जोड़कर उनका मूल्यांकन करने में सहायता करते है जो व्यक्तिगत ऊर्जा संतुलन को प्रभावित करते हैं और बड़े पैमाने पर रोकथाम की रणनीतियों के प्रभावों की निगरानी करते हैं।

3.1.2 आनुवंशिकी के साथ संबंध

मानवशास्त्रीय आनुवंशिकी एक कृत्रिम अध्ययन है जो मानव विज्ञानी द्वारा किए गए विकासवादी प्रश्नों के लिए आनुवांशिकी के तरीकों और सिद्धांतों को लागू करता है। ये मानवशास्त्रीय प्रश्न निम्नलिखित की चिंता करते हैंः

- मानव विकास की प्रक्रियाएँ,
- अफ्रीका से मानव प्रवासी,
- मानव विविधता के परिणामस्वरूप पद्धति, और
- जटिल रोगों में जैव-सांस्कृतिक भागीदारी।

मानवशास्त्रीय आनुवांशिकी अपने सम्बंधित विषय, मानव आनुवंशिकी से कैसे भिन्न है? दोनों क्षेत्र मानव आनुवांशिकी के विभिन्न पहलुओं की विभिन्न दृष्टिकोणों से जांच करते हैं। 1973

के कृत्रिम खंड (मानवशास्त्रीय आनुवांशिकी के तरीके और सिद्धांत) के साथ, यह स्पष्ट हो गया कि मानव विज्ञानी आनुवांशिकी और मानव आनुवांशिकता के चिकित्सकों द्वारा किए गए प्रश्न कुछ अलग हैं। छोटे, प्रजनन से पृथक, गैर-पश्चिमी आबादी, विकास और जटिल रोग कारणों का अध्ययन और संचरण पर एक व्यापक, जैव-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य पर जोर मानव आनुवांशिकी से मानवशास्त्रीय आनुवांशिकी को अलग करता है।

अमेरिकन जर्नल ऑफ ह्यूमन जेनेटिक्स (मानव आनुवांशिकी के क्षेत्र में अग्रणी पत्रिका) की सामग्री को देखकर, यह निष्कर्ष निकालते हुए हम देखते हैं कि रोग से जुड़े कारणों और प्रक्रियाओं और प्रभावित समलक्षणी (प्रोबेंड्स) और उनके परिवारों में इन प्रक्रियाओं की जांच पर अधिक जोर दिया जाता है। मानव विज्ञानी आनुवंशिकीविद् गैर-पश्चिमी प्रजनन रूप से पृथक मानव आबादी में सामान्य भिन्नता पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। मानवशास्त्रीय आनुवंशिकीविद् मात्रात्मक समलक्षणी के सह-चर के माध्यम से पर्यावरणीय प्रभावों को मापने का प्रयास भी करते हैं, जबकि मानव आनुवांशिकविद पर्यावरण-आनुवांशिक के परस्पर क्रिया के प्रभाव का आकलन करने के लिए पर्यावरण को परिमाणित करने का अक्सर कम प्रयास करते हैं।

3.1.3 रासायनिक विज्ञान के साथ संबंध

प्रदूषण एक विश्वव्यापी समस्या है और मानव आबादी के शरीर विज्ञान को प्रभावित करने की इसकी क्षमता बहुत अधिक है। बीसवीं सदी के मध्य से प्रदूषण के संबंध में मानव विकास और विकास के अध्ययन की संख्या और गुणवत्ता में वृद्धि हुई है। कई अध्ययनों में पाया गया है कि कुछ प्रदूषकों का मानव विकास पर, विशेष रूप से प्रसवपूर्व वृद्धि पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। एक भारी धातु, सीसा, आमतौर पर मानव आबादी में पाया जाता है और जन्म के समय मानव बच्चे के छोटे आकार से संबंधित होता है। जैविक प्रदूषकों में से एक पॉलीक्लोराइज्ड बाइफिनाइल के संपर्क में आए मनुष्यों के अध्ययन से पता चला है कि उनमें निम्नलिखित लक्षण दिखाई देते हैं:

- जन्म के समय छोटा आकार,
- उन्नत यौन परिपक्वता और
- थायराइड विनियमन से संबंधित हार्मोन का स्तर बदलना ।

इस प्रकार विभिन्न प्रदूषक विभिन्न शारीरिक मार्गों के माध्यम से प्रभाव डालते हैं।

हालांकि, कुछ अध्ययनों ने इन प्रभावों का अवलोकन नहीं किया है, जो दर्शाता है कि स्थिति जटिल है और बेहतर अध्ययन की तैयारी के साथ आगे और अध्ययन की आवश्यकता है। मानव शरीर क्रिया विज्ञान और विकास पर प्रदूषकों के प्रभाव को निर्धारित करना मुश्किल है क्योंकि इसके लिए काफी बड़ी संख्या में ऐसे विषयों की आवश्यकता होती है जो जानबूझकर उजागर नहीं होते हैं लेकिन जिनके लिए जोखिम को मापा जा सकता है। प्रदूषकों और प्रभाव के तंत्र के इन प्रभावों के लिए आगे के अध्ययन की आवश्यकता होती है और यह आशा की जाती है कि मानव स्वास्थ्य और कल्याण पर किसी भी हानिकारक प्रभाव को कम या अवरुद्ध किया जाएगा ।

अपनी प्रगति को जांचें 1

1) मानवमिति से क्या अभिप्राय है? यह सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में कैसे सहायता करता है?

....

....

....

....

2) मानव विज्ञान आनुवांशिकी मानव आनुवांशिकी से किस प्रकार भिन्न है?

....

....

....

3.1.4 पोषण के साथ संबंध

पोषण मानव विज्ञान पिछले 20 वर्षों में व्यावहारिक मानव विज्ञान की एक नई शाखा के रूप में उभरा है, और इसके तरीके पोषण सर्वेक्षण और पोषण संबंधी महामारी विज्ञान के तरीकों पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव डाल रहे हैं। पोषण मानव विज्ञान ने व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों के पोषण के प्रमुख पहलुओं के अध्ययन के लिए ठोस जानकारी प्रदान करते हुए तेजी से विकास करना जारी रखा है। क्षेत्र अनुसंधान के लिए पोषण मानव विज्ञान और रणनीतियों में पद्धतिगत विकल्प अधिक विशिष्ट जानकारी के लिए एक पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं:

- सामाजिक व्यवहार और घरेलू कामकाज,
- भोजन सेवन के निर्धारक,
- ऊर्जा व्यय का विश्लेषण।

3.2 अन्य अध्ययन विषयों के साथ सामाजिक/सांस्कृतिक मानव विज्ञान का संबंध

3.2.1 समाजशास्त्र के साथ मानव विज्ञान

सामाजिक विज्ञान सामाजिक मानव विज्ञान के सबसे निकट है, जिसे समाजशास्त्र कहते है। फिर भी उनके बीच के संबंध पर बहुत मजबूत और विभाजित दृष्टिकोण हैं। दोनों समाज का अध्ययन करने का दावा करते हैं, इसका केवल एक पहलू नहीं है, जैसे कि अर्थशास्त्र और राजनीति, लेकिन इसमें यह सब है। समाजशास्त्र सामाजिक मानव विज्ञान से बहुत पुराना है क्योंकि यह फ्रांस में आगस्टे कॉम्टे और इंग्लैंड में हर्बर्ट स्पेंसर के साथ शुरू हुआ था। जिन दो व्यक्तियों को मानव विज्ञान में ब्रिटिश परंपरा के संस्थापक के रूप में माना जाता है, वह हैं मालिनोव्स्की और रेडक्लिफ-ब्राउन, जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में फ्रांसीसी समाजशास्त्रियों के विचारों पर ध्यान आकर्षित किया। रॉयल एंथ्रोपोलॉजिकल इंस्टीट्यूट के

अध्यक्षीय संबोधन में रेडक्लिफ-ब्राउन ने कहा कि यदि कोई ऐसा चाहता है तो वह इस विषय को तुलनात्मक समाजशास्त्र कहने के लिए काफी इच्छुक है।

नए ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में से कई में समाजशास्त्र और मानव विज्ञान के संयुक्त विभाग हैं। हालांकि, विश्वविद्यालय दोनों विषयों में अलग-अलग डिग्री देते हैं, इसलिए इसका एक कारण होना चाहिए। कारण बहुत सरल हैः यह सिद्धांत के बजाय अभ्यास का विषय है, वे अलग-अलग विषय और अलग-अलग तरीकों से काफी हद तक सम्बंधित हैं। यह ध्यान दिया जा सकता है कि वे समाज के अध्ययन की शाखाएं हैं जैसे वनस्पति विज्ञान और प्राणी विज्ञान जीव विज्ञान की शाखाएं हैं।

मानव विज्ञान और समाजशास्त्र मानव सामाजिक व्यवहार की व्याख्या करते हैं और व्याख्या के लिए एक तुलनात्मक ढांचा प्रदान करते हैं। यद्यपि प्रत्येक अध्ययन विषय विभिन्न ऐतिहासिक परिस्थितियों की प्रतिक्रिया में उत्पन्न हुआ, जिसके परिणामस्वरूप प्रभाव और दृष्टिकोण की विविध परंपराएं उत्पन्न हुईं। मानव विज्ञान और समाजशास्त्र के अध्ययन के साथ कोई भी दुनिया के सभी क्षेत्रों में मानव समाज की एक विस्तृत श्रृंखला से परिचित हो जाएगा। जो लोग इसका अध्ययन करते हैं, वे सांस्कृतिक जटिलता, ऐतिहासिक संदर्भ और वैश्विक सम्बंधों, जो समाजों और सामाजिक संस्थानों को एक-दूसरे से जोड़ते हैं। वे समकालीन समाजों में निहित प्रमुख सामाजिक संरचनाओं और गतिशीलता के बारे में सीखेंगे, जो किसी भी समाज में मौजूद सामाजिक शक्ति और विशेषाधिकार के रूप में शामिल हैं, और ये अक्सर असमान शक्ति संबध कैसे व्यवस्थित, निरंतर, पुनरुत्पादित और रूपांतरित होते हैं, के बारे में भी सीखाता है।

मानव विज्ञान मानव प्रकार का एक तुलनात्मक अध्ययन है, इसका उद्देश्य मानव समूहों के बीच समानता और अंतर दोनों का वर्णन, विश्लेषण और व्याख्या करना है। मानव विज्ञानी उन विशेषताओं में रुचि रखते हैं जो किसी विशेष मानव आबादी में विशिष्ट या साझा होती हैं, बजाय इसके कि असामान्य और व्यक्तिगत रूप से अद्वितीय क्या है। मानव विविधता के अपने अध्ययन में, मानव विज्ञानी उन समूहों के भीतर व्यक्तियों के बीच के मतभेदों के बजाय विभिन्न समूहों के बीच मतभेदों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करते हैं।

मानव भिन्नता की व्याख्या करने के अपने प्रयासों में, मानव विज्ञानी दोनों मानव जीव विज्ञान के अध्ययन और मानव व्यवहार के सीखे और साझा की गई पद्धति, जिसे हम संस्कृति कहते हैं, को संयोजित करते हैं। क्योंकि मानव विज्ञानियों के पास मानव अनुभव के अध्ययन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण है जिससे वे मानव गतिविधि में रुचि रखते हैं।

अपनी प्रगति को जांचें 2

3) सामाजिक मानव विज्ञान विषय के लिए तुलनात्मक समाजशास्त्र शब्द का सुझाव किसने दिया?

....

....

....

....

....

4) समाजशास्त्र का विषय वस्तु क्या है ?

....

....

....

3.2.2 मनोविज्ञान के साथ मानव विज्ञान

व्यक्तित्व की अवधारणा मनोवैज्ञानिक अध्ययन का आधार है। मानव विज्ञानी इस क्षेत्र के दृष्टिकोण को संस्कृति के संदर्भ में व्यक्तित्व को परिभाषित करने के लिए करते हैं। व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए कई महत्वपूर्ण दृष्टिकोण पिछ्ले कुछ वर्षों में उत्पन्न हुए हैं। सामाजिक–सांस्कृतिक मील के दायरे में, व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में समाजीकरण और संस्कृतीकरण की प्रमुख अवधारणाओं का उपयोग किया जाता है। व्यक्तित्व के विकास के लिए उनके निहितार्थ का आकलन करने के लिए विभिन्न समाजों में विभिन्न प्रकार के बाल-पालन प्रथाओं की जांच की जाती है।

संक्षेप में, संस्कृति व्यक्तित्व में प्रतिबिंबित होती है और व्यक्तित्व संस्कृति को दर्शाते हैं। मनोवैज्ञानिक मानव विज्ञानी एक समाज की सांस्कृतिक संस्थाओं को निम्नलिखित में विभाजित करते हैं:

- प्राथमिक या बुनियादी संस्थानः इनमें भौगोलिक वातावरण, अर्थव्यवस्था, परिवार, समाजीकरण प्रथा, और राजनीतिक इत्यादि शामिल हैं।
- माध्यमिक या प्रक्षेप्य संस्थानः इनमें मिथक, लोककथाएं, धर्म, जादू, कला आदि शामिल हैं।

जबकि बुनियादी संस्थानों की पहली शर्त व्यक्तित्व है, व्यक्तित्व माध्यमिक संस्थानों का निर्माण करते हैं। प्रत्येक समाज में संस्कृति और व्यक्तित्व के बीच संबंध का अध्ययन मनोवैज्ञानिक मानव विज्ञानियों द्वारा किया जाता है।

मनोवैज्ञानिक मानव विज्ञानियों द्वारा कुशल अध्ययन 1920 के दशक तक नहीं किए गए थे। इनमें से कुछ विद्वानों के पहले के काम में वैज्ञानिक जीवन शक्ति का अभाव था। मौलिक मानवीय संघर्ष, जो मानव और व्यक्तिगत जरूरतों के बीच है, वह गुणात्मक हैं और इसका व्यक्तिगत रूप से और साथ ही सामाजिक स्तर पर पूरी तरह से जांच की जानी चाहिए। इस पहलू को महसूस किया गया था लेकिन न तो मनोवैज्ञानिक और न ही मानव विज्ञानी अकेले एक ही अध्ययन के समर्थन में समस्या के सभी क्षेत्रों का पर्याप्त प्रबंधन कर सकते थे। इस समझ ने मनोवैज्ञानिकों और मानवशास्त्रियों के बीच दो-तरफा प्रयास की आवश्यकता की ओर जोर दिया।

अपनी प्रगति को जांचें 3

5) मनोवैज्ञानिक अध्ययन का आधार क्या है?

....

....

....

6) मनोवैज्ञानिक मानव विज्ञानी का क्या उद्देश्य है?

....

....

....

3.2.3 इतिहास के साथ मानव विज्ञान

मानव विज्ञान और इतिहास दोनों अतीत में संस्कृति की उत्पत्ति, विस्तार और उन्नति का पता लगाने का प्रयास करते हैं। यहां हमारा अर्थ उस युग से है जब इंसान को भाषा को बातचीत के रूप में और लिखने के लिए भी इस्तेमाल करने का ज्ञान नहीं था । पुरातत्वविदों को मानव विज्ञान के इतिहासकारों के रूप में चिन्हित किया जाता है क्योंकि वे मानव के अतीत की घटनाओं को फिर से संगठित करने का प्रयास करते हैं। हालांकि, इतिहास के अध्ययन विषय के विपरीत जो केवल पिछले 5000 वर्षों से संबंधित है, जिसके दौरान मानव ने अपनी उपलब्धियों की लिखित सामग्री को पीछे छोड़ दिया था, पुरातत्वविद् उन लाखों वर्षों से चिंतित हैं जिनमें मानव ने लिखित भाषा के ज्ञान के बिना संस्कृति विकसित की है,जहाँ शब्द और केवल अलिखित सामग्री या कलाकृतियों का उपयोग किया है।

इस अर्थ में एक मानव विज्ञानी अतीत की संस्कृतियों का अध्ययन करता है और हमें उन लोगों के साधनों का विश्लेषण करके पिछले लोगों की तकनीक के बारे में बताता है जो अतीत में इस्तेमाल किए गए थे। यह उन लोगों के आर्थिक प्रयासों पर प्रकाश डाल सकता है जिन्होंने उस तकनीक का उपयोग किया है। मिट्टी के बर्तनों, और आभूषण जैसे विभिन्न सामग्रियों पर नक्काशी के अवशेषों को देखकर लोगों की यह कलात्मक क्षमता दृष्टिगत हो जाती है। बस्तियों में घरों के प्रमाण भी सामाजिक संरचना के विभिन्न क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। धार्मिक विश्वासों के कुछ पहलुओं को दफन स्थलों और उनके अंदर या उनके साथ रखी सामग्रियों द्वारा भी निर्धारित किया जा सकता है।

पुरातात्विक मानव वैज्ञानिकों के मुख्य तरीके निम्नलिखित हैं:

- कलाकृतियों का पता लगाने के लिए खुदाई
- एक कठिन समय अवधि के लिए तिथि निर्धारण और
- एक व्यक्ति के अतीत के सांस्कृतिक इतिहास को बनाने के लिए विलक्षण परिकल्पना।

इन सभी प्रयासों में मानव विज्ञानी अतीत की संस्कृतियों के पुनर्निर्माण से संबंधित अध्ययनों पर विभिन्न तरीकों से खोजबीन करते हैं, जो कि उन सामग्रियों से अज्ञात का पता लगाने की एक विधि है जो अच्छी तरह से ज्ञात हैं।

अपनी प्रगति को जांचें 4

7) मानव विज्ञानी और इतिहासकारों का सामान्य अध्ययन क्षेत्र क्या है?

....

....

....

....

8) इतिहासकारों ने मानव अतीत के किस काल का अध्ययन किया है?

....

....

....

....

9) पुरातात्विक मानव विज्ञानी द्वारा उपयोग की जाने वाली मुख्य विधि क्या है?

....

....

....

....

3.2.4 भाषा विज्ञान के साथ मानव विज्ञान

मनुष्य की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक भाषा के माध्यम से संवाद करने की क्षमता है। भाषाओं का अध्ययन करने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान की शाखा को भाषाई मानव विज्ञान कहा जाता है। भाषाई मानव विज्ञानी दो तरह से भाषाओं की विविधता के लिए जिम्मेदार हैंः

- यह दिखाया जा सकता है कि संस्कृति भाषा की संरचना और सामग्री को प्रभावित करती है, और निहितार्थ से, भाषाई विविधता कम से कम आंशिक रूप से सांस्कृतिक विविधता से उत्पन्न होती है।
- यह दिखाया जा सकता है कि भाषाई विशेषताएं संस्कृति के अन्य पहलुओं को प्रभावित करती हैं।

भाषा और संस्कृति के बीच संबंधों को प्रकट करने के लिए, मानव विज्ञानी ने दोनों तरीकों में से किसी एक को लिया है, जिसके परिणामस्वरूप इस मामले पर वाद-विवाद और संभाषण हुआ है। भाषा मानव विज्ञानी सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञानी का अनुकरण करता है। प्रत्येक भाषा में शब्दों और वाक्यांशों के अर्थ और सामग्री में अद्वितीय बारीकियां हैं जो केवल उन लोगों के लिए समझने योग्य है जो उस विशेष भाषा को बोलते हैं जो उनकी संस्कृति का परिणाम है। कुछ लोगों की भाषा में उनके आसपास की दुनिया की कुछ विशेषताओं के लिए संदर्भात्मक शब्द नहीं हो सकते हैं। ये उन विशेषताओं का संकेत देते हैं जो उन लोगों के लिए कोई सांस्कृतिक महत्व नहीं रखते हैं।

भाषाविदों और भाषा मानव विज्ञानी के बीच मुख्य अंतर यह है कि पूर्व मुख्य रूप से इस बात के अध्ययन से संबंधित है कि भाषाएं, विशेष रूप से लिखित भाषाएं कैसे बनाई जाती हैं और संरचित होती हैं, लेकिन भाषा मानव विज्ञानी अलिखित भाषाओं का अध्ययन करते हैं, जिसमें लिखित भाषाएं भी हैं। भाषाविदों और भाषा विज्ञान मानव विज्ञानी के बीच एक और महत्वपूर्ण अंतर यह है कि जिन विशेषताओं को पूर्व में लिया जाता है, उन्हें बाद में ध्यान में रखा जाता है। ये विशेषताएं ज्ञान, विश्वास, मान्यताओं और परंपराओं से संबंधित हैं जो लोगों के दिमाग में विशेष समय पर विशेष विचार उत्पन्न करती हैं।

अपनी प्रगति को जांचें 5

10) भाषा मानव विज्ञानी भाषाओं की विविधता के लिए कैसे जिम्मेदार हैं?

....

....

....

....

11) एक भाषाविद और भाषा मानव विज्ञानी के बीच प्रमुख अंतर लिखें ।

....

....

....

3.3 अन्य विषयों के साथ पुरातात्विक मानव विज्ञान का संबंध

पुरातात्विक मानव विज्ञान में, मनुष्य और संस्कृति को छोटे छोटे टुकड़ों और प्रारंभिक मनुष्य के अवशेषों और उसकी सामग्री जो पृथ्वी की सतह पर और सतह के नीचे भी विभिन्न स्थानों पर बिखरी हुई पाई जाती है, से पुनर्निर्मित किया गया। मानव विज्ञान में प्रारंभिक मनुष्य के पुनर्निर्माण की विधि को एक संयुग्मन माना जाता है। यह कई विज्ञानों की सहायता से किया जाता है।

कई विज्ञान, जैसे भूगोल, भूविज्ञान, पुरातत्व, इतिहास, वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी और गणित इस पद्धति में शामिल हैं। निश्चित रूप से मानव विज्ञान पुरातात्विक मानव विज्ञान के अध्ययन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि यह इस अध्ययन विषय की जननी है और इसने अपनी कार्यप्रणाली विकसित की है।

3.3.1 इतिहास के साथ संबंध

इसकी उत्पत्ति और विकास के अध्ययन के लिए कोई भी विषय इसकी उत्पत्ति के इतिहास के कारण है। उप-अध्ययन विषय की धीमी वृद्धि और विकास का कारण केवल इसके अस्तित्व का इसके इतिहास के अध्ययन में आने से ही समझा जा सकता है (पेनिमन, 1965)। इतिहास कहता है कि प्रागैतिहासिक/पुरातात्विक मानव विज्ञान एक सौ पचास वर्षों से अधिक पुराना है। इतिहास अलग-अलग कलाकृतियों और जीवाश्मों की खोज की प्रकृति, समय और क्रम को भी स्पष्ट और अपूर्ण बताता है। खोजों के इतिहास के आधार पर विकास, परिवर्तन और प्रसार तंत्र के विकास और समझ के सिद्धांत का अध्ययन किया जा सकता है। सांस्कृतिक इतिहास का पुनर्निर्माण इस विषय से संबंधित है। ऐतिहासिक अभिलेखों के साथ अक्सर पुरातात्विक आँकड़े, मनुष्य और संस्कृति की पूरी तस्वीर दर्शाते हैं, या तो अलग से दिए गए होते हैं।

3.3.2 पुरातत्व के साथ संबंध

पुरातत्वविद वह मानव विज्ञानी हैं जो अतीत की संस्कृति के भौतिक अवशेषों की खुदाई करते हैं (डीट्ज, 1967)। प्रारम्भ करने के लिए पुरातत्व काफी हद तक अतीत और हाल के अतीत,

दोनों के भौतिक अवशेषों से संबंधित है। लेखन की खोज से पहले, पुरातत्व मानव विज्ञान बहुत प्रारंभिक समय तक ही सीमित है। पुरातत्व भी अपने अध्ययन के लिए अन्य विषयों पर निर्भर है।

पुरातत्व मनुष्य द्वारा छोड़ी गई भौतिक वस्तुओं की खोज से संबंधित है। खोज दो प्रकार की होती हैः

- अन्वेषणः यह सतह से आँकड़े प्रदान करता है,
- उत्खनन : यह सतह के नीचे से आँकड़े बाहर लाता है।

पुरातत्वविदों ने अन्वेषण और उत्खनन दोनों से सामग्री एकत्रित करने के लिए तरीके और तकनीक विकसित की है। सामग्री बरामद होने के बाद, उन्हें स्थान, समय और रूप के संबंध के क्रम में रखा जाता है। (डिट्ज, 1967) चाइल्ड (1956) ने अपनी पुस्तक ''पीसींग टुगेदर द पास्ट'' में बताया है कि कैसे एक ही कलाकृतियों को खींचने और वर्णन करने के साथ शुरुआत की जा सकती है और फिर स्थान और समय में सभी संबंधित वस्तुओं की एक सूची बनाई जा सकती है। इसे उन्होंने एकत्रीकरण कहा। एकत्रीकरण से, पुरातत्वविदों ने संस्कृति पर निष्कर्ष निकाला और अंत में कुल सांस्कृतिक समय की व्याख्या की।

3.3.3 पृथ्वी (भू)-विज्ञान के साथ संबंध

पृथ्वी विज्ञान में भूगोल और भूविज्ञान दोनों शामिल हैं। दोनों विषयों के बीच सामान्य तत्व है 'भू' जिसका अर्थ है पृथ्वी। कई मामलों में, भूविज्ञान और भूगोल सामान्य हैं क्योंकि दोनों ही पृथ्वी के अध्ययन से संबंधित हैं। लेकिन वे पर्यायवाची नहीं हैं।

भूविज्ञान का संबंध समय से है और भूगोल का संबंध स्थान से है। भूविज्ञान सतह के नीचे की पृथ्वी का अध्ययन करता है और भूगोल पृथ्वी की सतह का अध्ययन करता है।

पृथ्वी, जो एक समय में पानी, हवा और तापमान के क्षरण और निक्षेपण गतिविधियों के कारण उत्पन्न हुई और समय के साथ जमी या टूट गई है। भूवैज्ञानिकों द्वारा इनका अध्ययन किया जाता है।

जब भूविज्ञान और भूगोल दोनों को एक साथ लिया जाता है, तो वे कालक्रमिक/ऐतिहासिक अध्ययन का आभास देते हैं।

- भूवैज्ञानिक पहलू मुख्य रूप से लम्बवत आयाम प्रस्तुत करता है।
- भौगोलिक विज्ञान स्थान की क्षैतिज अवधारणा प्रदान करता है।

पुरातात्विक मानव विज्ञान के लिए समय और स्थान की जानकारी दोनों बहुत महत्वपूर्ण हैं। पुरातात्विक मानव विज्ञान के साथ दो विज्ञानों के संबंधों पर अलग से चर्चा की जाती है।

3.3.4 शारीरिक/प्राकृतिक और जैविक विज्ञान के साथ संबंध

कई विज्ञान पुनर्निर्माण से निकटता से संबंधित हैं, मुख्य रूप से तिथि निर्धारण के संबंध में। ये रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, खगोल विज्ञान, गणित, सांख्यिकी, वनस्पति विज्ञान और जीव विज्ञान से सम्बंधित हैं।

तिथि निर्धारण के दो प्रकार हैं:

- सापेक्षः यह पहले से ही दिनांकित घटना के संबंध में मानव अवशेषों की तिथि को स्थापित करता है।
- निरपेक्षः यह कैलेंडर (कालक्रम) के निरपेक्ष संख्यात्मक क्रम में किसी वस्तु की तिथि को स्थापित करता है।

पुरातात्विक मानव विज्ञान के साथ इन विज्ञानों के संबंध का वर्णन नीचे दिया गया है।

विकिरणमापिय (रेडियोमेट्रिक) तिथि निर्धारण भौतिक और रासायनिक विज्ञान पर आधारित है। सबसे अधिक ज्ञात रेडियो कार्बन विधि है जो रेडियोधर्मी कार्बन (C14) पर की जाती है। अन्य रेडियोमेट्रिक विधियां पोटेशियम आर्गन विधि, थोरियम यूरेनियम विधि, थर्मोल्यूमिनिसेन्स, ओब्सीडियन हाइड्रेशन, फिस्सन ट्रैक और आर्कियोमग्नेटिज्म हैं।

पुरातात्विक मानव विज्ञान में रसायन विज्ञान के महत्व के कुछ उदाहरणों में फ्लूरिन परीक्षण, अमीनो एसिड रेसमाईजेशन (रेसिमीकरण) और नाइट्रोजन विश्लेषण हैं। इसके अलावा ये नष्ट होने वाली वस्तुओं के संरक्षण प्रणाली भी प्रदान करते हैं ।

इलेक्ट्रॉनिक्स (आण्विकी) पृथ्वी की सतह के नीचे की वस्तुओं का पता लगाने के लिए साधन प्रदान करता है। विद्युत चुम्बकीय प्रतिध्वनि की सहायता से, दफनाई गईं वस्तुओं जैसे , धातु की वस्तुओं, दफन दीवारों, नींव, भट्टों, भट्टियों, चूल्हा और यहां तक कि ऊपरी मिट्टी या कूड़े से भरे हुए गड्ढों और खाइयों का भी पता लगाया जा सकता है। उपग्रह चित्र न केवल सतह पर पुरातात्विक रुचि की असामान्य विशेषताओं की पहचान करने में सहायता करते हैं बल्कि यह दफन वस्तुओं की ओर भी इशारा करते हैं। सुदूर संवेदन पुरातत्वविदों के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है।

मनुष्य, पशु साम्राज्य का एक हिस्सा है। जानवरों के साथ उसका संबंध सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है। मनुष्य मांसाहारी जानवरों का शिकार हो सकता है या वह अन्य जानवरों का शिकार कर सकता है। मनुष्य अपने फायदे के लिए जानवरों को पालतू बनाता है। जीववैज्ञानिकों की सहायता से, मानव-पशु संबंध और इसके सांस्कृतिक निहितार्थ को ठीक से समझा जाता है। अतीत के जीवों की पहचान जीववैज्ञानिकों द्वारा की जाती है।

वृक्ष कालानुक्रमिकी (डेंड्रौक्रोनोलोजी) तिथि निर्धारण की एक विधि है जो वनस्पति विज्ञानी करते हैं। वनस्पति विज्ञान मानव और पेड़ पौधों के संबंधों का विश्लेषण करने में भी सहायता करती है। मनुष्य पौधों के संसाधनों का उपयोग भोजन, फाइबर, दवा, कंटेनर आदि के रूप में करता है। वे न केवल अपने प्राकृतिक आवास में पौधों का उपयोग करते हैं, बल्कि उन्हें पालतू भी बनाते हैं। ये मानव इतिहास के मोड़ हैं और खेती और वर्चस्व तंत्र की उत्पत्ति को वनस्पति विज्ञान की मदद से शोध किया जा सकता है।

अंत में शेल मछली, मोलस्क, सूक्ष्म पौधे, जानवर और वायरस हैं, जो पर्यावरण में किसी भी तरह के बदलाव के प्रति संवेदनशील हैं। वे पर्यावरण और संस्कृति के तिथि निर्धारण और पुनर्निर्माण के लिए भी महत्वपूर्ण चिन्हक हैं।

अपनी प्रगति को जांचें 6

12) वृक्ष कालानुक्रमिकी क्या है?

....

....

....

....

....

3.4 सारांश

मानव विज्ञान, व्यवहार या सामाजिक विज्ञान के साथ निकटता से संबंधित है। भौतिक/जैविक मानव विज्ञान समय और स्थान में मानव जैविक विविधता से संबंधित है। जीव मानव सहित सभी जीवित जीवों के साथ व्यवहार करते हैं। जैविक मानव विज्ञान और जीव विज्ञान के बीच संबंध यह है कि दोनों विषयों की उत्पत्ति, विकास, आनुवंशिकता, भिन्नता और मानव की शारीरिक और शारीरिक विशेषताओं का विश्लेषण करती है।

जैविक मानव विज्ञान मानव की भौतिक विशेषताओं का अध्ययन करता है। यह जीवविज्ञान के सामान्य सिद्धांतों का उपयोग करता है और शरीर रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान, भ्रूण विज्ञान, प्राणी शास्त्र जीवाश्मि की और इसी तरह के निष्कर्षों का उपयोग करता है। पॉल ब्रोका (1871) ने भौतिक मानव विज्ञान को "विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जिसका उद्देश्य मानवता का विभिन्न भागो और प्रकृति के साथ संबधों का सम्पूर्ण अध्ययन करना है"।

समानताओं के अलावा, दोनों विषय कई मामलों में भिन्न हैं।

जीव विज्ञान	**मानव विज्ञान**
एक जैविक विज्ञान है ।	-सामाजिक विज्ञान है ।
मनुष्य को जैविक इकाई के रूप में देखता है ।	मनुष्य को जैविक और सामाजिक दोनों तरह के इकाइयों के रूप में देखता है।
सभी जीवित जीवों का अध्ययन करता है।	प्रारंभिक मनुष्य और मानव प्रजातियों का अध्ययन करता है।

जबकि जीव विज्ञान को एक जैविक विज्ञान माना जाता है, लेकिन मानव विज्ञान को जैव-सामाजिक विज्ञान माना जाता है। जीव विज्ञान के अध्ययन में, एक मानव को एक जैविक इकाई के रूप में देखा जाता है जबकि जैविक मानव विज्ञान में एक मानव को एक जैविक और सामाजिक इकाई दोनों माना जाता है। उदाहरण के लिए, जब एक जीव विज्ञानी किसी जीव के विज्ञान को समझने की कोशिश करता है, तो वह खोपड़ी की लंबाई और चौड़ाई के विवरण में कभी नहीं जाता है। जबकि भौतिक मानव विज्ञानी अपने विवरणों में खोपड़ी की जांच करता है। इस प्रकार, मानव विज्ञान में सामान्य जीव विज्ञान के कुछ पहलुओं का विशेषज्ञता या तेजी होना है।

जीव विज्ञानी सभी जीवित जीवों का अध्ययन करते हैं लेकिन मानव विज्ञानी प्रारंभिक मानव और मानव प्रजातियों का अध्ययन करने के लिए प्रतिबंधित हैं। पुरातत्व, जीवाश्म विज्ञान, अस्थि विज्ञान, भूविज्ञान, और भूगोल जैसे विषय जैविक मानव विज्ञानी और पुरातत्व मानव विज्ञानी को मानव विकास के जैविक और सांस्कृतिक पहलुओं के पुनर्निर्माण में मदद करते हैं। जीवाश्मों और कलाकृतियों की तकनीक का उपयोग करने में, मानव विज्ञानी भौतिकी, रसायन विज्ञान और भूविज्ञान से मदद लेते हैं। मानव विज्ञानी मानव जीवाश्मों और कलाकृतियों के अध्ययन के समय वनस्पति विज्ञान, जंतु विज्ञान और जीवाश्म विज्ञान जैसे विषयों के साथ सहयोग करते हैं।

3.5 संदर्भ

चाइल्ड, वी जी (1956). पीसींग टूगेदर द पास्ट *द इंटरप्रीटेशन ऑफ आर्कियोलॉजीकल डेटा*. लंदनः रूटलेज और केगन पॉल.

क्रॉफोर्ड, एम एच (एड) (2007). *एंथ्रोपोलॉजीकल जेनेटिक्सः थ्योरी मेथड्स एंड एप्लिकेशंस*. कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

डीट्ज, जे (1967). *इनविटेशन टू आर्कियोलॉजीः विद इल्लस*. बाय एरिक जी इंगस्ट्रॉम डबलडेः नैचुरल हिस्ट्री प्रेस.

मैयर, एल पी (1972). *एन इंट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपोलॉजी*. नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

पेनिमन, टी के (1965). *ए हंड्रेड इयर्स ऑफ एंथ्रोपोलॉजी.* लंदनः जी डकवर्थ.

3.6 आपकी प्रगति की जांच के लिए उत्तर

अपनी प्रगति को जांचें 1

1) उप-भाग 3.1.1 का संदर्भ लें

2) उप-भाग 3.1.2 का संदर्भ लें

अपनी प्रगति को जांचें 2

3) ए आर रेडक्लिफ-ब्राउन ने सुझाव दिया कि सामाजिक मानव विज्ञान को शायद तुलनात्मक समाजशास्त्र का रूप कहा जा सकता है।

4) उप-भाग 3.2.1 का संदर्भ लें

अपनी प्रगति को जांचें 3

5) उप-भाग 3.2.2 का संदर्भ लें

6) उप-भाग 3.2.2 का संदर्भ लें

अपनी प्रगति को जांचें 4

7) उप-भाग 3.2.3 का संदर्भ लें

8) उप-भाग 3.2.3 का संदर्भ लें

9) उप-भाग 3.2.3 का संदर्भ लें

अपनी प्रगति को जांचें 5

10) उप-भाग 3.2.4 का संदर्भ लें

11) उप-भाग 3.2.4 का संदर्भ लें

अपनी प्रगति को जांचें 6

12) उप-भाग 3.3.4 का संदर्भ लें

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY